साप्ताहिक
शांति मिशन
नई दिल्ली

वर्ष-28 अंक- 22 30 मई 05 जून 2021 पृष्ठ 12

अन्दर पढ़िए

अस्पतालों में आग की लपटों से निकलते सवाल पृष्ठ-6

तीसरी लहर से पहले उसे पहचाने पृष्ठ-7

जमीयत उलेमा-ए-हिंद के माननीय अध्यक्ष, दारुल उलूम देवबंद के सहायक अधीक्षक

अमीरुल हिंद हज़रत मौलाना क़ारी सैयद उस्मान मंसूरपुरी का निधन

एक त्रासदी, इस्लाम राष्ट्र के लिए बड़ी क्षति

हज़रत क़ारी साहब निःसंदेह अपने आप में एक अंजुमन थे वह महान मुहद्दिस, एक मुहद्दिस, एक संरक्षक, एक उच्च प्रशासक, सबसे लोकप्रिय शिक्षक और सरल व्यक्ति थे

मौत वास्तविक और बरहक़ है, इसका समय और कारण भी निश्चित है। यह अलग बात है कि इन सब से हमें अनजान रखा गया है। कोरोना के इस घातक काल में विगत डेढ़ शताब्दीं में किस प्रकार मृत्यु ने अमीर-ग़रीब, विद्वान्-अज्ञानी, शासक उत्पीड़ित, उत्पीड़क- उत्पीड़ितों को एक समान स्तर पर ला खड़ा किया है, इसका उदाहरण हो सकता है।

पिछले डेढ़ वर्ष से जारी मौतों का सिलसिला और जिस तरह के कोविड-19 ने जिस तरह आम और विशेष लोगों को अपना शिकार बना रहा है, उसने साबित कर दिया है कि मौत जितनी यकीनी है उसका वक़्त अनिश्चित है जितनी तय है, निःसंदेह इस काल में हुई मृत्यु एक बड़ा सदमा है, चाहे वह परिवार तक सीमित हो, परिवार के अन्य सदस्यों तक हो या दूर-दूर तक लाखों प्रशसकों और मानने वालों तक फैली हो, जिसकी सिसकियां विश्व स्तर पर महसूस की जा रही है किसी भी मामले को एक बड़ा सदमा और दुख कहा जाएगा।

यह एक कड़वा सच है कि पिछले डेढ़ वर्ष में लाखों लोगों के साथ-साथ हमें हज़ारों ऐसे विशेष व्यक्ति भी हम इस दुनिया में अकेला छोड़ गए जो अपनी धार्मिक व्यावहारिक, राष्ट्रीय विशेषताओं से प्रतिष्ठित थे। यह एक दर्दनाक घटना है जो कार्यालय से बाहर निकलना संभव नहीं तो मुश्किल बना देगा। मौत की यह बारंबारता जीवन की रंगों को भी पिघला रही है क्योंकि एक प्रमुख व्यक्ति के निधन की ख़बर को इस दुःख से भी नहीं संभाला जाता है कि एक और महत्वपूर्ण व्यक्ति के निधन की ख़बर सदमे के रूप में आती है, तो एक तीसरा पुरुष के निधन की ख़बर हृदय को पीड़ा देने लगती है और फिर उसी समय एक चौथे शोक समाचार की पीड़ा शेष धैर्य और शक्ति को दुःख और शोक में बदल देता है ऐसा लगता है कि शायद कुदरत का इरादा ही कुछ और है। हर तरह की लाली, रंग और गंध का गुलदस्ता, मौतों की इस आवृत्ति ने हर दिशा में अवसाद और चिंता की स्थिति पैदा कर दी है और यह डर हमेशा दिखाई देता है। यह अपने तरह का एक अजीब अनुभव है जिससे हम गुज़र रहे हैं। यह अपनी तरह का अजीब अनुभव जिससे हम सब सामना रहे हैं।

मौत, एक सच्चाई है, उसका समय तय है, लेकिन उसके समय के ज्ञान को अनिश्चित बना दिया गया है, इसलिए हर इंसान मृत्यु की निश्चितता का उल्लेख करता है, लेकिन उसके अनिश्चित समय का उल्लेख नहीं करता है, क्योंकि मृत्यु कभी घोषणा नहीं करती कि मैं आ रही हूं, बस कभी कभी हालात ऐसे बनते हैं, और कभी कभी अचानक हमला कर देती है। लोग हैरान है और आश्चर्य करते हैं कि क्यों, यह भी एक सच्चाई है कि आज तक कोई भी व्यक्ति, चाहे वह प्रतिष्ठित हो या आमजन एक मुक़र्रर समय के बाद मौत की जद से नहीं बच पाया, फिर भी मनुष्य अपनी मृत्यु से बेख़बर है।

यह भी एक सच्चाई है कि दुनिया में जो कुछ आया है, वह जाने के लिए आया है, इसलिए कहा जाता है कि ''आने का पूर्वाभास होता है'' फिर हो जाते हैं उनकी भी अपनी रैंक होती है। कुछ ऐसे हैं जो जानते हैं कि उनका दुःख परिवार तक ही सीमित है, कुछ ऐसे भी है जो अपने दुःख का दायरा घर, परिवार, गांव तक फैलाते हैं, कुछ ऐसे भी हैं जो पूरे क्षेत्र में शोक मनाते हैं। मैं पीड़ित हो जाता हूं और कुछ समझदार और उच्च लोगों का निधन शोक का रूप धारण कर लेता है और उनके दुख और दुख की सीमा निर्धारित करना संभव नहीं है। कोरोना के इस डेढ़ वर्ष के समय में ऐसी कई महान हस्तियों ने हमें अपने ज्ञान और आचरण, धार्मिक, शैक्षिक और राष्ट्रीय सेवाओं के मामले में देश में प्रतिष्ठित होने का गौरव दिलाया है। इनमें वे लोग शामिल हैं जो आधुनिक विज्ञान से संबंधित थे, जो धार्मिक विज्ञान

बाक़ी पेज 03 पर

मजलिसे आमला जमीयत उलेमा-ए-हिन्द की एक अहम बैठक में

मौलाना महमूद मदनी साहब को जमीयत उलेमा-ए-हिन्द का अस्थायी अध्यक्ष चुना गया

मौलाना हकीमुद्दीन क़ासमी को अस्थायी जनरल सेक्रेट्री चयनित

नई दिल्ली : 27 मई 2021 जमीयत उलेमा-ए-हिन्द की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एक अहम बैठक केन्द्रीय कार्यालय 1, बहादुर शाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली, स्थित मदनी हाल में हज़रत मौलाना रहमतुल्लाह साहब कश्मीरी रुक्न शुरा देवबंद की अध्यक्षता में हुई।। बैठक में पहले अमीरुल हिन्द मौलाना क़ारी सैयद मुहम्मद उस्मान मंसूरपुरी रह॰ के इन्तेक़ाल पर श्रद्धांजलि और इसाले सवाब के बाद जमीयत उलेमा-ए-हिन्द की रिक्त हुए अध्यक्ष पद के स्थान को लेकर चर्चा हुई। तमाम मेम्बरों की आम सहमति से मौलाना मदनी महमूद मदनी साहब की एक राय से अस्थायी अध्यक्ष चुना गया। जिसका ऐलान बैठक के अध्यक्ष मौलाना रहमतुल्लाह साहब कश्मीरी ने किया, उसके बाद आगे की कार्यवाही, नए चुने अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी की अध्यक्षता में पूर्ण हुई। मौलाना महमूद मदनी साहब के अध्यक्ष चुने जाने की वजह से चूंकि जनरल सेक्रेट्री का पद रिक्त हो गया, इसलिए जनरल सेक्रेट्री के लिए अस्थायी तौर पर मौलाना हकीमुद्दीन क़ासमी का नाम तय किया गया। कार्यकारिणी में जमीयत उलेमा-ए-हिन्द के इलाक़ाई और रियासती इन्तेख़ाबात के लिए जारी सरगर्मियों का भी जायज़ा लिया गया और देश के विभिन्न क्षेत्रों में पेश आने वाले लॉकडाउन के कारण इस काम के लिए मज़ीद तीन माह की अवधि बढ़ाई गई। मजलिसे आमला में दोनों जमीयतों के एक करने के संबंध में अपने इरादे का इज़हार करते हुए अपने पहले मौकफ़ की तौसीअ की। इस अहम बैठक में नवनिर्वाचित अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी साहब के अलावा बतौर सदस्य मौलाना रहमतुल्लाह कश्मीरी, मौलाना मुफ़्ती मौ॰ सलमान मंसूरपुरी, मौलाना मुफ़्ती राशिद आज़मी, मौलाना शौक़त अली वेट, मुफ़्ती मौ॰ जावेद इक़बाल क़ासमी, मौलाना नियाज़ अहमद फारूक़ी शरीक हुए। जबकि बज़रिए ज़ूम (ऑनलाइन) मुफ़्ती अबुल क़ासिम नौमानी मोहतमिम शेख़ुल हदीस दारूल उलूम देवबंद, मौलाना नदीम सिद्दिकी, मौलाना पीर शब्बीर अहमद, मौलाना मुफ़्ती इफ़्तिख़ार अहमद, मौलाना बदरुद्दीन अजमल, मौलाना मौहम्मद रफ़ीक मज़ाहिरी, मौलाना सिराजुद्दीन नदवी अजमेर और विशेष तौर पर आमंत्रित मौलाना मुहम्मद सलमान बिजनौरी उस्ताद दारुल उलूम देवबंद, मुफ़्ती अब्दुल रहमान नौगांवा सादात, मुफ़्ती अहमद देवला, हाजी मौहम्मद हारून, मौलाना अली हसन मज़ाहिरी, मौलाना अब्दुल कुद्दुस पालनपुर, मौलाना मुहम्मद आक़िल गढ़ी दौलत, डॉ॰ सईदुद्दीन नांगलोई, बज़रिए ज़ूम मुफ़्ती मोहम्मद अफ़्फ़ान मंसूरपुरी, क़ारी मुहम्मद अमीन, डॉ. मसऊद अहमद आज़मी, मुफ़्ती हबीबुर्रहमान इलाहाबाद, मौलाना गुलाम क़ादिर पुंछ, मौलाना मुहम्मद इल्यास मिफ़्ताही पिपली मझरा, क़ारी मौहम्मद अय्यूब मुम्बई, मौलाना मौहम्मद याहया असम शरीक हुए।

पाकिस्तान में जीएसपी प्लस का असर

पाकिस्तान की दशा दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान ख़ान यूरोपिय संघ की संसद में सर्वसम्मति से पारित उस प्रस्ताव के बाद खुद को कठिनाई में महसूस कर रहे हैं, जिसमें यूरोपीय संघ ने पाकिस्तान के साथ तरजीही व्यापारिक समझौते की समीक्षा की बात कही है। यूरोपीय संघ ने पाकिस्तान में विवादित ईश निंदा क़ानून की वजह से यह प्रस्ताव पारित किया है। एक ओर यूरोपीय संघ की तरजीह की सामान्यीकृत योजना यानि जीएसपी प्लस दर्जे की वजह से पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था को काफी फायदा हो रहा है, तो दूसरी ओर ईश निंदा क़ानून धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से एक बेहद संवेदनशील मुद्दा है। यूरोपीय संघ के प्रस्ताव में पाकिस्तान में ईशनिंदा मामलों की बढ़ोत्तरी और मानवाधि कारों के हनन पर चिंता जताई गई है।

इसके अलावा इस प्रस्ताव में फ्रांस विरोधी भावनाओं पर भी चिंता जताई गई है तो फ्रांस के राष्ट्रपति इमानुएल माक्रो के उस बयान के बाद बढ़ी है कि वो इस्लामी चरमपंथी के ख़िलाफ़ सख़्त कार्रवाई करेंगे। यूरोपीय संसद के जर्मन सदस्य राइनहार्ड बुटीकोफर कहते हैं कि तत्कालिक मामला एक ईसाई जोड़े से संबंधित है जो ईश निंदा के आरोप में पाकिस्तानी जेल में पड़े है। डीडब्ल्यू से बातचीत में उन्होंने कहा कि यह तो सिर्फ एक मामला है। ऐसे न जाने कितने और मामले हैं। यह सिर्फ ईसाई जोड़े से संबंधित नहीं है बल्कि तमाम दूसरे धर्मों के लोग भी इस क़ानून का दंश झेल रहे हैं। हमारा मानना है कि यह मध्य कालीन ईशनिंदा क़ानून जैसा है। बुटीकोफर कहते हैं कि यह एक स्पष्ट राजनीतिक संकेत है कि जीएसपी प्लस दर्जा इकतरफा नहीं है।

बल्कि यह समझना चाहिए कि संबंधित देश को भी मानवाधिकार, पारदर्शिता, ज़िम्मेदारी और दूसरे

> **आपको बता दें कि इस्लामी देश पाकिस्तान में ईशनिंदा कानून एक बेहद संवेदनशील विषय है, जहां 97 प्रतिशत आबादी मुस्लिम है। ईश निंदा कानून के आरोपों को झेल रहे सैकड़ों लोग पाकिस्तान की जेलों में सालों से बंद है। इस्लाम या फिर पैग़म्बर मोहम्मद साहब के अपमान के आरोप में कई लोगों को भीड़ ने पीट-पीटकर मार डाला है या फिर हत्या कर दी गई है।**

मानदंडों का पालन करना चाहिए। जीएसपी प्लस दर्जा पाकिस्तान के लिए एक बड़ी आर्थिक मदद है क्योंकि इसके ज़रिए वह यूरोपीय यूनियन संघ के साझीदार की हैसियत से अपना 66 प्रतिशत निर्यात बिना किसी शुल्क के ईयू के देशों का कर सकता है। मुझे लगात है कि इसके लिए कुछ शर्ते लगाना बहुत ज़रूरी है। पाकिस्तान के दक्षिणपंथी समूहों ने यूरोपीय संघ की संसद के इस प्रस्ताव की कड़ी आलोचना की है।

साथ ही देश के ईशनिंदा क़ानून का जमकर बचाव किया। डीडब्ल्यू की एक रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान में दक्षिणपंथियों का कहना है कि पश्चिम देशों को इस्लाम या पैग़म्बर मोहम्मद साहब का अपमान करने की इजाज़त नहीं दी जा सकती। पिछले दिनों इमरान ख़ान ने भी यूरोपीय संघ के इस प्रस्ताव पर चर्चा के लिए कैबिनेट की बैठक की। इस मुद्दे पर व्यवहारिकता दिखाने की बजाय, इमरान ख़ान ने फैसला किया कि वो ईशनिंदा क़ानून पर किसी तरह का समझौता नहीं करेंगे। उनके मन्त्रिमंडल के सदस्यों ने भी इस बात पर ज़ोर दिया कि ईशनिंदा क़ानून पर आंच नहीं आने देनी चाहिए। फिर भी, सरकार का कहना है कि वो मानवाधिकार से जुड़े दूसरे मुद्दों पर एक विधेयक ला सकती है।

आपको बता दें कि इस्लामी देश पाकिस्तान में ईशनिंदा कानून एक बेहद संवेदनशील विषय है, जहां 97 प्रतिशत आबादी मुस्लिम है। ईश निंदा कानून के आरोपों को झेल रहे सैकड़ों लोग पाकिस्तान की जेलों में सालों से बंद है। इस्लाम या फिर पैग़म्बर मोहम्मद साहब के अपमान के आरोप में कई लोगों को भीड़ ने पीट-पीटकर मार डाला है या फिर हत्या कर दी गई है। वर्ष 1947 में पाकिस्तान को यह कानून ब्रिटिश शासकों से विरासत

बाक़ी पेज 11 पर

लॉकडाउन में छूट मिलने पर सतर्कता और बढ़ानी होगी

दिल्ली में बीते एक सप्ताह में 17 हज़ार से अधिक कंटेनमेंट जोन कम होना सकारात्मक संकेत है। रोज़ लगभग दो हज़ार कंटेनमेंट जोन कम हो रहे हैं। संक्रमित मरीज़ों की संख्या भी कम हो रही है और संक्रमण दर भी काफी नीचे आ गया है। एक समय था जब रोज़ाना 25 हजार के करीब नए मामले आ रहे थे और संक्रमण दर 30 प्रतिशत तक से भी ऊपर पहुंच गई थी। हालात इतने ख़राब हो गए थे कि लोगों को अस्पतालों में जगह नहीं मिल रही थी। समय पर ऑक्सीजन व इलाज नहीं मिलने के कारण कई लोगों की मौत हो गई। वहीं, पिछले कुछ दिनों से लगातार स्थिति सुधर रही है। इससे उम्मीद जगी है कि कुछ दिनों हालात और बेहतर हो जाएंगे। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने भी हालात सुधरने में लॉकडाउन में कुछ छूट देने की बात कह रहे हैं। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि अगले कुछ दिनों तक दिल्ली में संक्रमण की क्या स्थिति रहती है, इसलिए हम सभी को सचेत रहना होगा।

हमें नहीं भूलना चाहिए कि अभी संक्रमण के मामले कम हुए हैं इसका ख़तरा नहीं टला है। कुछ माह पहले भी कोरोना संक्रमण के मामले बहुत कम हो गए थे। लोगों की ज़िन्दगी सामान्य हो गई थी। आर्थिक गतिविधि यां रफ्तार पकड़ने लगी थी। इसके साथ ही लोग लापरवाह हो गए, जिसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है। कई लोगों ने अपनों को खो दिया। पिछले एक माह से ज़्यादा दिनों से दिल्ली में लॉकडाउन है। सभी बड़े बाज़ार बंद हैं। लोगों के रोज़गार जा रहे हैं। इससे हमें सबक़ लेते हुए कोरोना से बचाव के लिए सचेत रहना होगा। लॉकडाउन में छूट मिलने पर सतर्कता और बढ़ानी होगी। सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देश का सख़्ती से पालन करने की ज़रूरत है। ❑❑

कोरोना से जान गंवाने वालों के स्वजन को मिलेगी आर्थिक मदद : केजरीवाल

कोरोना महामारी के शिकार हुए परिवारों की दिल्ली सरकार आर्थिक मदद करेगी। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इसका ऐलान करते हुए कहा कि चार योजनाएं शुरू की जा रही हैं, जो कोरोना के कारण जान गंवाने वाले लोगों के परिवारों की मदद के लिए है।

सीएम केजरीवाल ने प्रेस वार्ता में कहा कि कहां कि नई योजनाओं में बच्चों की पढ़ाई से लेकर बेसहारा हुए लोगों तक की मदद करने की व्यवस्था की गई है। जिन लोगों की कोरोना से मौत हुई है, उनके परिवार को 50-50 हजार रुपये की आर्थिक मदद दी जाएगी। यदि परिवार में कमारे वाले व्यक्ति की मौत हो गई है तो आर्थिक सहायता के साथ ही आश्रित को 2500 रुपये प्रतिमाह पेंशन दी जाएगी। जान गंवाने वाला व्यक्ति यदि अविवाहित था तो यह सहायता माता-पिता को मिलेगी।

जो बच्चे महामारी में बेसहारा हो गए हैं, उन्हें 25 साल की आयु तक 2500 रुपये प्रतिमाह की आर्थिक सहायता दी जाएगी। इसके साथ ही उनकी शिक्षा मुफ्त होगी। इस योजना के पात्र वही बच्चे होंगे, जिनके माता पिता में से किसी एक का पहले निधन हो चुका है, जबकि दूसरे का निधन कोरोना से हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार इन सभी योजनाओं को जल्द कैबिनेट में पास कराकर लागू करने का प्रयास करेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली में 72 लाख राशन कार्डधारकों को हर माह सस्ते दाम पर पांच किलो राशन मिलता है। इस माह यह राशन नि:शुल्क दिया जा रहा हैं पांच किलो राशन केन्द्र सरकार की ओर से दिया जा रहा है। जिन गरीबों के पास राशन कार्ड नहीं है उन्हें भी राशन मिलेगा। इसके लिए आय प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं होगी। इसकी भी व्यवस्था जल्द से जल्द लागू हो जाएगी।

दिल्ली पुलिस युवाओं का कौशल निखारेगी

कोरोना काल में दिल्ली पुलिस ने कई तरह के मानवीय काम किए हैं। ऑक्सीजन संकट के समय ऑक्सीजन मुहैया कराया, कोरोना संक्रमित मरीज़ों के प्लाज्मा की ज़रूरत को पूरा करने के लिए जीवन रक्षक नाम से अभियान चलाया। अब पुलिस स्वास्थ्य कर्मियों की कमी को भी पूरा करने की योजना पर काम कर रही है। इसके लिए दिल्ली पुलिस आयुक्त एस. एन. श्रीवास्तव ने सीआइआइ के प्रतिनिधियों व दिल्ली के सभी डीसीपी के साथ वीडियो कांफ्रेंस के ज़रिये बैठक की। बैठक में युवा पहल के तहत पंजीकृत युवाओं का स्वास्थ्य सेवाओं में कौशल बढ़ाने को लेकर चर्चा की गई।

पुलिस आयुक्त ने कहा कि कोरोना से जंग में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में कौशल विकास पर ज़ोर दिया जाना ज़रूरी है। मौजूदा संकट में कई युवाओं ने अपने घर के आर्थिक बोझ को संभालने वालों को खो दिया है। ऐसे में उन्हें आजीविका कमाने के लिए कौशल विकसित करने में हम सब के समर्थन की आवश्यकता है। ऐसे में स्वास्यि सेवा में कौशल इन युवाओं के लिए एक अच्छे भविष्य का विकल्प हो सकता है। बैठक में विशेष पुलिस आयुक्त देवेश चंद्र श्रीवास्तव ने कहा कि महामारी में स्वास्थ्य कर्मियों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और बढ़ाया जाएगा। उन्होंने बताया कि उत्तरी ज़िले में पहले ही स्वास्थ्य कर्मियों के प्रशिक्षण का कार्यक्रम शुरू हो चुका है। सीआइआइ के सह-संयोजक डॉ. रवि गौड़ ने कहा कि स्वास्थ्य सेवा में युवाओं का कौशल, प्रशिक्षण और प्लेसमेंट एक स्वागत योग्य क़दम है, क्योंकि इस क्षेत्र के महत्व को लोग अभी सीख रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह की पहल आने वाले दिनों में मांगों को पूरा करने और लोगों की सेवा करने का एक लंबा रास्ता तय करेंगे।

संपादकीय

शांति मिशन

अमीरुल हिंद हज़रत मौलाना क़ारी सैयद उस्मान मंसूरपुरी का निधन

एक त्रासदी, इस्लाम राष्ट्र के लिए बड़ी क्षति

के विशेषज्ञ थे और न्यायशास्त्र के गुणों से सम्पन्न थे और जो अपनी राष्ट्रीय सेवा के लिए प्रतिष्ठित थे। अल्लाह इन सभी सज्जनों को अपने रहम और करम से उनके आला मक़ाम अता फरमाएं।

प्रतिष्ठित और विशेष व्यक्तित्वों में शुमार हज़रत मौलाना क़ारी सैयद मुहम्मद उस्मान मंसूरपुरी, जमीयत उलेमा-ए-हिन्द के अध्यक्ष, दारुल उलूम देवबंद के सहायक अध्यीक्षक से सम्मानित व्यक्ति भी ऐसे ही लोगों में शुमार हैं, जिनका इस दुनिया से जाना बड़ा ख़सारा है। (21 मई, बरोज़ शुक्रवार) जुमा की नमाज़ के समय एक बजकर पन्द्रह मिनट बाद कुछ दिनों की बीमारी के बाद इस महान हस्ती ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। वह कोरोना के कारण जटिलताओं से जूझ रहे थे इनकी मौत की ख़बर इस तेज़ी से फैली जिससे पूरे देश में मातम और मायूसी छा गई और यह लोग बिलख कर रोने लगे। अपने साठ वर्षीय धार्मिक, शैक्षिक, कल्याण और राष्ट्रीय सेवाओं को अंजाम देने के बाद, वह अपने रब्बे ज़ुल जलाल के हुज़ूर तशरीफ ले गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजऊन।

अल्लाह रब्बुल आलमीन हज़रत की नेकियों को क़बूल फरमाकर अपनी रहमत के साये में एक विशेष स्थान प्रदान करें और उनके बच्चों, परिवार, रिश्तेदारों और पूरे इस्लामी राष्ट्र सहित शोक संतप्त लोगों को सब्र जमील अता फरमाए..आमीन्!

रक़ीम अल-हुरोफ़ की आंखों के सामने 6, फरवरी 2006 का वह मंज़र सामने आ गया, जब फिदाय मिल्लत हज़रत मौलाना असअद मदनी रह॰ के वफ़ात एक बड़ी त्रासदी थी, जिससे पूरे आलमे इस्लाम पर बहुत दुख और शोक के बादल छा गए थे। आपके निधन की दुखद ख़बर सुनकर ऐसा लगा जैसे दिल की धड़कन रुक गई हो, ज़ुबान गूंगी हो गई हो, क़लम की सियाह सूख गई हो और समय की गति शोक करने के लिए रुक गई हो। आज लगभग सोलह साल बाद जब हज़रत मौलाना क़ारी सैयद मुहम्मद उस्मान साहब रह. के निधन की ख़बर सामने आई तो यही स्थिति है। आपके निधन की त्रासदी इतनी दुखद है कि यह दिल दहला देने वाली ख़बर है। ज़ुबान ख़ामोश है और क़लम की स्याही कागज पर छाप नहीं लिख पाती। अपना दर्द बयां करने के लिए हमारे पास उपयुक्त शब्द नहीं है। समय अपनी गति से आगे बढ़ रहा था, किसी को इस बात का आभास भी नहीं था कि हज़रत-ए-वाला अचानक हमें इस दुनिया में अकेले छोड़कर चले जाएंगे। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मर्ज़ी। समय अपनी गति से आगे बढ़ रहा था, किसी को इस बात का आभास भी नहीं था कि हज़रत का यूं इस दुनिया से कूच होगा। अल्लाह की मर्ज़ी के आगे कोई कुछ सोच भी नहीं सकता।

हज़रत क़ारी साहब आम लोगों की तरह नहीं थे। अल्लाह तआला ने उन्हें एक ऐसा मक़ाम दिया जिससे वह अपने समकालीन विद्वानों में श्रेष्ठता प्रदान की। उनकी नज़र हमेशा निकट भविष्य के साथ साथ दूर के भविष्य पर भी रहती थी। उनकी दूरदर्शिता ने उन्हें महत्वपूर्ण मुद्दों पर चिंतन करने के लिए मजबूर किया, जिन तक उनके समकालीन विद्वान् बहुत बाद में पहुंच पाए। हमारे क़ारी साहब उन लोगों में से नहीं थे जो अपने महान कामों के लिए जाने जाते थे वह बहुत ही सरल ओर सीधे तरह के स्वभाव के थे और हर तरह की प्रसिद्धि और बदनामी से दूरी बनाना उनके स्वभाव में था। नम्रता, शालीनता और निस्वार्थता शायद आपकी सबसे विशिष्ट विशेषता थी। जो कोई भी उनसे मिलने के लिए उनकी सेवा में आया था, वह इस बात की गवाही दे सकता था कि उनके आने के कारण जानने से पहले, उनकी पहली आदत थी कि पह खुद आकर उनका इस्तक़बाल करते। लोगों से बड़ी दिलचस्पी से मिलते थे। यह रक़ीम अल-हुरोफ़ का व्यक्तिगत अनुभव है उनके हुस्ने अख़लाक़ की यह मिसाल थी कि उनके सामने छोटे और बड़े कर्मचारी में कोई भेदभाव नहीं था, वह सब से समान व्यवहार, वार्ता करते थे। वह अपने घर के भी वर्करों के साथ बेहतरीन सलीके से पेश आते थे। हज़रत क़ारी साहब को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस्तिग़ना की दौलत से नवाज़ा था। यही वह गुण है जिसकी आज के समय में विद्वानों की मंडली को सख़्त ज़रूरत है। यही वह विशेषता है जो विद्वानों की जमात में क़ारी साहब को विशेष स्थान देती है। विद्वानों के काम ज़्यादातर अल्लाह के अनुसार होते हैं ताकि देखने वाले को पता चले कि वे दुनिया के लिए जो भी काम कर रहे हैं वह अल्लाह के बताए हुए तौर तरीक़े के अनुसार और फलाह के लिए कर रहे हैं, वह किसी लालच में नहीं आते। याद रहे कि जब तक विद्वानों में यह भेद नहीं हो जाता, तब तक उनमें निःस्वार्थता और ईमानदारी पैदा नहीं होगी। उनके व्यक्तित्व का सम्मान और प्रभावशाली नहीं किया जा सकता है। विद्वानों की गरिमा तभी स्थापित होगी जब वे स्वयं को आदर्श के रूप में प्रदर्शित करेंगे। फिर जब लोग देखते हैं कि धन के लिए काम किया जाना है, लेकिन ऐसे विद्वान् हैं जो अपने हाथों से पैसा छूना भी पंसद नहीं करते हैं, हमारे कारी साहब शायद इस बात को अच्छी तरह से समझते थे, इसलिए उन्होंने हमेशा हर मौक़े पर इस्तिग्ना का रास्ता अपनाया और बहुत मददगार रहे। ज्ञानी और विद्वानों के लिए वह प्रेरणाश्रोत बने तब उन्हें सम्मान के योग्य घोषित किया गया और हर सभा उनके सम्मान का केन्द्र बन गई, क्योंकि सच्चा सम्मान केवल व्यावहारिक उदाहरण, चरित्र और नैतिकता के उत्थान, तप, आध्यात्मिकता और उच्च नैतिकता से ही प्राप्त किया जा सकता है।

क़ारी उस्मान साहब का व्यक्तित्व बहुत व्यापक था। शरीआ की संहिता के साथ-साथ राजनीति के रहस्यों को भी अच्छी तरह से समझकर दूसरों को समझाने की समझ रखते थे। एक इबादतगुज़ार होने के साथ अच्छे संस्कार भी उनके जीवन में शामिल रहे, उनकी बोलचाल में नम्रता उनके व्यक्तित्व में चार चांद लगाती थी। वह पत्थर को हीरा बनाने की कला से परिचित थे। उन्हें पता नहीं था कि उनके पचपन साल के शिक्षण और प्रशिक्षण जीवन में कितने हीरे आज के अंधेरे और अज्ञानी युग में अंधेरे में चमक रहे हीरे में बदल गए हैं। क़ुरआनी समझ की महक, सीरते पाक सल्ल॰ की अत्रबेज़ी और हुब्बे असहाबे नबी की महक ने भी उनके दिल दिमाग़ को महका दिया था।

हज़रत क़ारी साहब को सीखने, और धर्म में रूचि, अरबी भाषा और लेखन में प्रबंधन और लेखन में उच्च क्षमता के लिए ऊंचा स्थान प्राप्त किया। उन्होंने जामिया क़ासमिया बिहार में अपने शिक्षण कैरियर की शुरूआत की, जहां वे लगभग पांच सालों तक रहे। इस संस्था के आयोजकों विशेषकर इस विश्वविद्यालय के अधीक्षक हज़रत मौलाना क़ारी फख़रुद्दीन मोहतमिम जामिया हाज़ा के लिए नेअमतें ग़ैर मुतरक्काबा साबित हुआ। उन्होंने अपने अध्यापक उत्तरदायित्वों के साथ साथ विश्वविद्यालय प्रणाली के सुधार पर भी विशेष ध्यान दिया और यह उनकी प्रशासनिक और शिक्षण बुद्धि का ही परिणाम था कि वे लम्बे समय तक शैक्षिक और संगठनात्मक सुधारों के कारण जामिया क़ासमिया में रहे।

जामिया कासमिया के बाद, उन्होंने जामिया मस्जिद अमरोहा के जामिया इस्लामिया के शिक्षण का काम बख़ूबी अंजाम दिया। आपका यहां लगातार ग्यारह वर्ष का सफर शानदार रहा। यहां भी, आपके दिन प्रतिदिन के शैक्षिक, शिक्षण और प्रशासनिक संघर्ष ने संस्थान के शैक्षिक विकास और प्रशासनिक सुधार में योगदान दिया। 1982 में आप अरबाबे दारुल उलूम की फरमाइश पर दारुल उलूम देवबंद आए, जहां उनके प्रशासनिक कौशल का अच्छा उपयोग किया गया। वर्ष 1986 में दारुल उलूम में शोबे ख़त्मे तहफ़्फ़ुज़-ए-ख़त्मे नब्बूवत की स्थापना हुई। सबसे पहले इसकी ज़िम्मेदारी आपको नाज़िम के रूप में सौंपी गई थी। यह आपकी प्रबंधकीय कौशल का लाभ उठाने के लिए, आपको प्रतिनिधित्व का एक महत्वपूर्ण पद सौंपा गया है, जिसे आपने पहली बार संभाला था। उन्होंने वर्ष 2000 में कुछ कारणों से इस पद से इस्तीफा दे दिया था, लेकिन वर्ष 2013 में एक बार फिर उन्हें दारुल उलूम देवबंद के प्रबंधन के लिए अपरिहार्य माने हुए सहायक अधीक्षक का पद सौंपा गया था। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने दारुल उलूम देवबंद में प्रशासनिक सुधारों और दारुल उलूम देवबंद के शैक्षिक, शिक्षण और प्रशासनिक मामलों में सुधार के लिए कई महत्वपूर्ण क़दम उठाए। उन्होंने 03 मार्च से जमीयत उलेमा-ए-हिन्द के अध्यक्ष पद का पद संभाला, फिर अमीर-उल-हिंद मध्यस्थ हजरत मौलाना मरग़ूब-उर- रहमान साहब के निधन के बाद उन्हें अमीर-उल-हिंद चुना गया। उन्होंने अपने ओहदे के हर तक़ाज़े को पूरा किया। भारत के शरिआ अमीरात के अध्यक्ष और जमीयत उलेमा हिन्द के अध्यक्ष के रूप में, आपने देश और राष्ट्र को जो कड़ी मेहनत, समर्पण, संघर्ष, ईश्वर प्रदत्त दूरदर्शिता और व्यक्तिगत संगठनात्मक और सुधारात्मक क्षमता प्रदान की है वह एक उज्जवल अध्याय जिसकी किरणें लम्बे समय तक आने वाली पीढ़ियों को इसकी रोशनी देती रहेंगी।

जमीयत उलेमा-ए-हिन्द की अपनी तेरह वर्षीय अध्यक्षता के दौरान, जहां उन्होंने 2016 में अजमेर शरीफ में आयोजित जमीअत उलेमा हिंद के 33वें इजलास की अध्यक्षता की। एशिया की तीन महान संस्थाओं, जमीयत उलेमा-ए-हिन्द, भारत के शरीआ अमीरात और विशेष रूप से दारुल उलूम देवबंद और सामान्य रूप से इस्लाम राष्ट्र को जो बड़ी क्षति हुई है, उससे पार पाना मुश्किल लगता है। ऐसे महान ईमानदार और निस्वार्थ नेता के निधन से पूरा देश और इस्लामी जगह शोक में डूबा गया है।

आपका पैदाइश 12 अगस्त 1944 को मंसूरपुर ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर के एक सादात परिवार में हुआ था। आपके पिता स्वर्गीय नवाब मुहम्मद ईसा साहब एक रईस घराने से संबंध रखते थे। धन के साथ परहेज़गारी आपको अपने स्वभाव, पवित्रता, क्षमता, शरीयत के पालन और शरीयत के विपरीत मामलों से घृणा करने का एक हिस्सा बनाया है। उन्हें अपने बच्चों को शिक्षित करने और सच्चाई पर चलने का जुनून था जिसके लिए उन्होंने मंसूरपुर पलायन किया और देवबंद में अस्थायी निवास किया। आपके वालिद का इंतेक़ाल 1963 में देवबंद में हुआ, उन्हें मज़ार-ए-क़ासमी में दफ़नाया गया। देवबंद में रहने के दौरान, उन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया और यह उनके ध्यान और ईमानदार जुनून का प्रभाव है कि अल्लाह ने उनके बेटे सैयद मुहम्मद अफ़्फ़ान हुस्नो जमाल के साथ फज़्लो कमाल, शराफ़त और तक़वा व तहारत के साथ इल्मो-ए-अमल की दौलत से सरफराज़ फरमाया, अमीरुल उल हिन्द हज़रत मौलाना क़ारी सैयद मौहम्मद उस्मान साहब सदर जमीयत उलेमा हिन्द व सहायक अधीक्षक दारुल उलूम देवबंद के विशेष पद से नवाज़ा। उन्होंने अपनी शुरूआती शिक्षा मालूफ़ मंसूरपुर में प्राप्त की। उन्होंने पिता से कुरआन हिफ़्ज़ किया और फारसी से लेकर दौरे हदीस व तकमीलात की तालीम दारुल उलूम देवबंद में हासिल की। 1965 ईस्वी मुताबिक 1385 हिजरी में दौरे हदीस की तकमील की। हमेशा की तरह इम्तियाज़ी नम्बरात के साथ कामयाबी हासिल की। तजवीद और किरआत की तालीम क़ारी हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब और क़ारी अतीक अहमद से हासिल की। हज़रत मौलाना वहीद अल जमान साहिब से अरबी साहित्य में पूर्णता हासिल की। अमीरुल हिंद फिदाए मिल्लत हज़रत मौलाना सैयद असअद मदनी रह॰ की ज़ेरे तर्बियत उन्हें प्रशिक्षण के अनुमति और ख़िलाफत दी गई। शेख़ उल इस्लाम की बेटी इमराना ख़ातून से वर्ष 1966 में निकाह हुआ। मुफ़्ती मुहम्मद सलमान साहब और मुफ़्ती मोहम्मद अफ़्फ़ान दो होनहार बेटे और एक बेटी हैं। दोनों बेटे मदरसा शाही जामिया मस्जिद अमरोहा में सेवारत हैं। अल्लाह तआला उनकी सेवाओं को स्वीकार करे। क़ारी साहब और खुद उनके लिए आख़िरी का ख़ज़ाना बनाए..आमीन्! हज़रत क़ारी उस्मान साहब को साप्ताहिक अल-जमीयत/शांति मिशन से विशेष लगाव था, वह उसके मुस्तक़िल क़ारी थे और हर सप्ताह उनको इन पेपरों का इंतज़ार रहता था, उसकी कॉलमों में अगर कुछ आपको पसंद आता तो फोन करके उसकी तारीफ फरमाते और हौंसला अफज़ाई वाली बातें इरशाद फरमाते। इस प्रकार क़ारी साहब मरहूम असरे हाज़िर में एक मिसाली और काबिले तक़लीद व्यक्तित्व थे जिसको बनाने में हज़राते अकाबिर बिल खुसूस उनके वालिद मरहूम की दुआओं और दारुल उलूम देवबंद के असादतज़ा हज़रात की नेक दुआओं का बड़ा योगदान रहा।

हज़ारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा,

बहरहाल हज़रत क़ारी साहब की वफ़ात मिल्लते इस्लामिया का एक अज़ीम ख़सारा जिसकी तलाफ़ी नामुमकिन नहीं तो मुश्किल ज़रूर है।

जमीयत उलेमा-ए-हिन्द जहां एक मुदब्बिर मुतहर्रिकुल अमल और बवक़ार सदर से महरूम हो गई है, वहीं अमारते शरीआ हिंद एक साहिबे फिरासत अमीर और मजलिसे तहफ़्फ़ुज़े ख़त्मे नब्बूवत और तहफ़्फ़ुज़े अज़्मते सहाबा के लिए उठने वाली मज़बूत आवाज़ से महरूम हो गई है।

क़ारी साहब की वफ़ात दारुल उलूम देवबंद के लिए एक बड़ा नुकसान है, आपकी वफ़ात से दारुल उलूम देवबंद ने एक माया-ए-नाज़ उस्ताद व मुरब्बि, आला मुंतज़िम और तलबा के हमदर्द को खो दिया है। अल्लाह तआला इन तमाम मिल्ली और तालीमी इदारों को हज़रत क़ारी साहब मरहूम का नेअमूल बदल इनायत फरमाए और उन इदारों की आबयारी के लिए हज़रत मरहूम ने जो जद्दोजहद की है उसे क़बूल फरमाकर आपके लिए ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत फरमाएं..आमीन्। ❑❑

म्यूटेंट्स पर भी काम करेगी नई दवा : डॉ॰ सुधीर चांदना

पिछले दिनों ड्रग कंट्रोलर ऑफ इंडिया ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की बनाई एक दवा 2डीजी कोरोना मरीज़ों को दिए जाने की संस्तुति की हैं यह दवा आईएनएमएएस- डीआरडीओ के दो वैज्ञानिकों डॉ. सुधीर और अनंत भट्ट ने तैयार की है। क्या है यह दवा और केसे काम करती है, इस पर नाभकीय औषधि एवं सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इन्मास) के हेड डॉ. सुधीर चंदना से बातचीत हुई, पेश है इस बातचीत के प्रमुख अंश :-

प्रश्नः- सबसे पहले तो हमें इस दवा के बारे में बताई। ये क्या चीज़ है, किन लोगों को देनी होती है.?

उत्तरः- यह दव ग्लूकोज का बदला हुआ रूप है। इसे 2 डीऑक्सी डी-ग्लूकोज (2डीजी) कहते है। यह दवा वायरस की ग्रोथ रोकती है। ऐसा हमने पिछले साल अप्रैल मई में एक्सपेरिमेंट करके टेस्ट किया। वायरस से हमारे शरीर में जब कुछ सेल्स इंफेक्ट हो जाते है, तब से ज़्यादा ग्लूकोज मांगते हैं। हम मरीज़ को ग्लूकोज का यह बदला हुआ रूप देते हैं, तो इसके साथ-साथ 2डीजी उन सेल्स में जाता है वायरस की ग्रोथ में रुकावट आ जाती है। जब हम मरीज़ को सुबह शाम इसकी डोज देते हैं तो वायरस आगे ग्रो नहीं कर पाता और तब हमारा सिस्टम वायरस को ख़त्म करने में मदद करता है।

प्रश्नः- जैसा हमने देखा है कि वायरस पहले के 2-3 दिन गले या नाक में रहता है, तो क्या शरीर में वायरस आने के पहले दिन से ही यह दवा दी जा सकती है..?

उत्तरः- जो क्लिनिकल ट्रॉयल हमने किए, वे हमने अस्पताल में भर्ती मरीज़ों पर किए। उन मरीज़ों पर जो शुरुआती दौर से निकल कर मॉडरेट लेवल पर आ चुके थे, और कुछ गंभीर मरीज़ भी थे। पर हां, इस दवा का जो मैकेनिज़्म है वह शुरुआती दौर में लेने में भी बहुत फायदा करेगा। अभी हमें मॉडरेट से सीवियर मरीज़ों पर इसके इस्तेमाल की अनुमति मिली है, आगे जैसे जैसे दवा का प्रयोग बढ़ेगा, ड्रग कंट्रोलर से ही आगे के दिशा निर्देश लिए जाएंगे।

प्रश्नः- इस दवा को बनाने की शुरुआत कैसे हुई?

उत्तरः- मेरे साथी डॉ. अनंत नारायण भट्ट ने इस विषय पर पिछले वर्ष मार्च-अप्रैल के आसपास बातचीत की ओर बताया कि इस दवा को लेकर पहले से कई रिपोर्टर्स और स्टडीज है। उन स्टडीज में पाया गया कि इसके मॉलिक्यूलस ने कई तरह के वायरसों की बढ़त रोकी। ये स्टडीज 1959 से लेकर 2018-19 के बीच की थीं। अब हमारे सामने कोरोना वायरस था, जिस पर इसके असर की स्टडी करनी थी। उसके लिए मेरे साथी डॉ. अनंत सेंटर फॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी, हैदराबाद गए, जहां कोरोना के कल्चर की स्टडी होती हैं हमारे चेयरमैन डॉ. जी सतीश रेड्डी का कहना था कि अगर इस दवा में दम है तो हमें काम शुरू कर देना चाहिए। हमने काम शुरू किया तो एक्सपेरिमेंट में यह बातसामने आई कि कोरोना वायरस जब सेल्स में इन्फेक्ट करता है, तो इस दवा को देने से इसकी ग्रोथ रुक जाती है।मगर सार्स कोविड वायरस पर एक्सपेरिमेंट्स करना आसान नहीं है, तो बार-बार ये एक्सपेरिमेंट्स किए गए। जब नतीजे पॉजिटिव आने लगे, तो हमने ड्रग कंट्रोलर से आग्रह किया कि हमें क्लिनिकल ट्रॉयल की मंज़ूरी दी जाए। हमने जो क्लिनिकल ट्रॉयल किए, उनमें सभी पेशंट अस्पताल में ऑक्सिजन सपोर्ट पर थे। थर्ड फेज का ट्रॉयल 220 मरीज़ों पर किया। उनमें से 110 मरीज़ों को स्टैंडर्ड केयर और बाकी 110 को स्टैंडर्ड केयर के साथ 2डीजी ड्रग पर रखा। ट्रायल में यह बात सामने आई कि 110 मरीज़ों पर 2डीजी ड्रग काफी असरदार रही।

प्रश्नः- आरटी पीसीआर रिपोर्ट में सीटी वैल्यू आती हैं तो क्या यह माना जाए कि इस दवा की खुराक भी उस वैल्यू से निर्धारित होगी?

उत्तरः- हमारा इम्यून सिस्टम एक दिवार की तरह होता है। मान लीजिए कि कोई दीवार इतनी मज़बूत होती है कि आप 10 बार भी इस पर चोट करें, तो इसे कुछ नहीं होगा। इसके विपरीत एक कमज़ोर दीवार पर 3-4 बार चोट करने पर ही दरार दिखने लगती है। ठीक उसी तरह कमज़ोर म्यूटन सिस्टम पर लक्षण जल्दी दिखने लगते हैं। फिर इंसान का इम्यून सिस्टम ही तय करता है कि किसी वायरस का उसके शरीर में कितना असर होगा इसलिए सीटी वैल्यू मात्रा बताती है और उसका लक्षणों से सीधा ताल्लुक नहीं मिला है।

प्रश्नः- हम देख रहे हैं कि कोविड वायरस में कई सारे म्यूटेशन भी हो रहे हैं। क्या यह दवा सारे म्यूटेशंस पर भी काम करेगी.?

उत्तरः- म्यूटेशन की बात करें तो सारे म्यूटेंट्स शरीर की कोशिकाओं को इन्फेक्ट करते हैं। यह दवा संक्रमित कोशिकाओं पर कारगर होती है और वहीं पर वायरस को आगे बढ़ने से रोक देती है।

प्रश्नः- हाल ही में कोविड की तीसरी लहर भी आने की बात हुई है और कह रहे हैं कि इसका बच्चों पर ज़्यादा असर हो सकता है? ऐसे में क्या यह दवा बच्चों के लिए भी काम आएगी?

उत्तरः- जो क्लिनिकल ट्रायल हुए हैं, वे सभी पेशंट 18 वर्ष की आयु से बड़े थे। तो बच्चों को यह दवा दी जाएगी या नहीं, यह ड्रग कंट्रोलर ही तय करेंगे। वैसे यह दवा नुकसान नहीं करती और इसकी बहुत माइल्ड डोज ही दी जाती है। ❑❑

भारत ने अमेरिका से सीख नहीं ली और तैयारी भी नहीं कर पाया, इसका खामियाज़ा अब जनता भुगत रही है : डॉ॰ सायरा मडाड

धीमी वैक्सीनेशन दर के कारण भारत कोरोना वायरस को म्यूटेंट होने का पूरा अवसर दे रहा है, जो दुनिया के लिए ख़तरा बन सकता है। दुखद है कि भारत ने जिस तैयारी की उम्मीद थी, वह नाकाफी रही है, ये कहना है डॉ॰ सायरा मडाड का जो अमेरिका के न्यूयार्क सिटी हेल्थ हॉस्पिटल चेन की सीनियर डायरेक्टर है। पेश है उनसे बातचीत के प्रमुख अंशः-

प्रश्नः- महामारी की मौजूदा परिस्थिति को कैसे देखना चाहिए? इससे कब तक छुटकारा मिल सकता है?

उत्तरः- हम अभी वैश्विक कोविड महामारी के के आपाताल फेज में है और इस स्थिति से बाहर आने में 2 वर्ष तक लग सकते हैं। महामारियां एकदम से कभी ख़त्म नहीं होतीं। वैश्विक महामारी घटने के बाद भी दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में समस्या बनी रह सकती हैं। हमें नहीं भूलना चाहिए कि 1917-18 में आया स्पैनिश फ्लू अभी भी संक्रमित करता है और इससे बचने के लिए हर वर्ष फ्लू शॉट्स लेने पड़ते हैं। कोविड भी आजीवन रहेगा। मास्क, वैक्सीन और स्वास्थ्य के ताक़तवर इंफ्रास्ट्रक्चर से ही इस वायरस से बचा जा सकता है।

प्रश्नः- भारत में कोविड संक्रमण की मौजूदा परिस्थितियां से आप कितनी वाकिफ़ हैं?

उत्तरः- मैं न्यूयार्क में हूं, जहां दुनियाभर से आए लोग रहते हैं। हमें दुनिया में कोविड के फैलाव से वाकिफ़ रहना ही पड़ता है। लिहाज़ा, मैं भारत की परिस्थिति से भी वाकिफ़ हूं। दुखद है कि भारत जैसे देशों में इस वायरस से बचाव के प्रति जिस संवेदनशीलता और तैयारी की ज़रूरत थी वो नाकाफी रही है। भारत दूसरी लही आने से चौंका, ये भी अपने आप में आश्चर्यचकित करने वाली बात है। भारत में हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर अमेरिका की तुलना में कमज़ोर रहा है, फिर भी अमेरिका से सीख लेकर भारत ने समय रहते तैयारी नहीं की, जिसका ख़ामियाज़ा जनता को भुगतना पड़ रहा है।

प्रश्नः- भारत को ऐसा क्या करना चाहिए था, जो वो नहीं कर पाया है?

उत्तरः- भारत की सबसे बड़ी समस्या ये है कि यहां डाटा में पारदर्शिता नहीं है। महामारियों से लड़ने के लिए ईमानदार डाटा होना सबसे ज़रूरी है। वरना ये कैसे पता चलेगा कि वायरस का बर्ताव क्या है। कुछ दिनों पहले सुनने में आया कि भारत में एक नया टास्क फोर्स गठित हुआ है। ये अच्छी बात है लेकिन बहुत देर हो चुकी है। प्रश्न उठता है कि इसकी डिलीवरी कैसी होगी। सबसे बड़ी चुनौती होती है समय से पहले उन लोगों तक ज़रूरी मेडिकल सामग्री उपलब्ध कराना। इसके लिए पारदर्शी डेटा चाहिए और टेस्टिंग चाहिए। डेटा होने पर ही ये अनुमान लगाया जा सकता है कि कितनी सामग्री चाहिए होगी, ताकि उसे उपलब्ध कराया जा सके। इसके बाद डिलीवरी और डिस्ट्रिब्यूशन यानि लॉजिस्टिक्स की व्यवस्था करनी पड़ती है। सबसे बाद ये भी सुनिश्चित करना होता है कि आकस्मिक परिस्थितियों जैसे सुनामी, मॉनसून, बर्फीले तूफान में कोविड के साथ-साथ अन्य बीमारियों से ग्रस्त मरीज़ों की देखभाल कैसे की जाए। इन सारे प्रश्नों पर भी भारत नाकामरहा है। इसी का नतीजा है कि भारत में ऑक्सीजन, वेंटिलेटर, अस्पतालों में बिस्तर, दवाईयों की कमी हो रही है।

प्रश्नः- क्या भारत में पाए जा रहे कोरोना के नए वैरिएंट के ख़िलाफ़ मौजूदा वैक्सीन कारगर है.?

उत्तरः- अमेरिका के अब तक के अनुभव बताते हैं कि वैक्सीन वायरस के ख़िलाफ़ बहुत हद तक कारगर है लेकिन भारत की स्थिति अलग है। पारदर्शिता न होने के कारण यहां के क्लिनिकल ट्रॉयल के नतीजों का डाटा देखना और उससे निष्कर्ष निकालना भी मुश्किल है। इस संभावना को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता कि वायरस का ऐसा म्यूटेशन भी आ सकता है जो वैक्सीन को बायपास कर दे। अगर ऐसा हुआ तो दुनिया फिर से खतरे में आ सकती है। फिलहाल तथ्य तो यही है कि वैक्सीन बुरी तरह बीमार होने या वायरस के कारण मृत्यु से बचाने में सक्षम है। ❑❑

मिज़ान .... **विभूति नारायण राय**

भारत-पाक

खुलेंगी खिड़कियां एक दिन

वर्ष 1947 में भारत का विभाजन एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें सहमतियों से अधिक असहमतियों की गुंजाइश हमेशा बची रहती है। बहुत सारे मिथक है, जो हमने अपने नायकों, घटनाओं व नतीजों के इर्द गिर्द बुन रखे हैं, और जैसे ही कोई बौद्धिक इन्हें 'डींकस्ट्रक्ट' करने का प्रयास करता है, उसे बहुत से पूर्वाग्रहों और सरलीकृत स्थापनाओं से जूझना पड़ता है। भारत और पाकिस्तान, दोनों जगहों पर विभाजन को लेकर एक ऐसा विमर्श मौजूद है, जिसके केन्द्र में हिन्दुओं और मुसलमानों के 1,300 सालों से अधिक के संग साथ की तल्ख़ियां और मिठास दिख ही जाती है। दोनों देशों में पढ़ाए जाने वाले इतिहास की पाठ्य पुस्तकें खुद ही एक गंभीर समाजशास्त्रीय अध्ययन का विषय हो सकती हैं। किसी एक ही व्यक्तित्व या घटना के बारे में दोनों के विवरणों और स्थापनाओं में

भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन की गुत्थियों को सुलझाने के लिए 1,300 सालों के उस पड़ोस को समझना ज़रूरी है , जो आठवीं शताब्दी में मोहम्मद बिन क़ासिम के सिंध विजय के साथ शुरू हुआ था। यह पड़ोस दुनिया की दो बड़ी जीवन पद्धतियों का था। एक ओर, धर्म की शास्त्रीय समझ से परे हिन्दू थे और दूसरी ओर, आसमानी किताब और आख़िरी पैग़म्बर में यकीन रखने वाले मुसलमान और स्वाभाविक ही इनकी विश्व दृष्टि एक दूसरे से बहुत भिन्न थी।

इतना अंतर दिखता है कि विश्वास नहीं होता, वे एक ही विषय वस्तु के इर्द गिर्द अपना ताना बाना बुन रहे हैं। इस तरह की विभक्त बौद्धिक दुनिया में पिछले कुछ सालों से प्रोफेसर इश्तियाक अहमद एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप कर रहे है। लाहौर में जन्मे, पढ़े बढ़े और शुरुआती शिक्षा प्राप्त पाकिस्तानी मूल के स्वीडिश नागरिक प्रो. अहमद वहीं इतिहास और राजनीति शास्त्र पढ़ाते रहे है। पिछले कुछ सालों में आंग्रेजी में छपी उनकी दो पुस्तकें : *पंजाब 'लहूलुहान, विभाजित और नस्ली सफाई तथा जिन्ना: सफलताएं, असफलताएं और इतिहास में उनकी भूमिका* भारतीय उपमहाद्वीप की सांप्रदायिक राजनीति को समझने का प्रयास करने वाले किसी भी गंभीर अध्येता के लिए अनिवार्य पाठय सामग्री बन गई है।

भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन की गुत्थियों को सुलझाने के लिए 1,300 सालों के उस पड़ोस को समझना ज़रूरी है, जो आठवीं शताब्दी में मोहम्मद बिन क़ासिम के सिंध विजय के साथ शुरू हुआ था। यह पड़ोस दुनिया की दो बड़ी जीवन पद्धतियों का था। एक ओर, धर्म की शास्त्रीय समझ से परे हिन्दू थे और दूसरी ओर, आसमानी किताब और आख़िरी पैग़म्बर में यकीन रखने वाले मुसलमान और स्वाभाविक ही इनकी विश्व दृष्टि एक दूसरे से बहुत भिन्न थी। इस संग - साथ ने रचनात्मकता की दुनिया में बहुत कुछ श्रेष्ठ निर्मित किया। साहित्य, संगीत, स्थापत्य, मूर्तिकला, पाक शास्त्र हर क्षेत्र में इन्होंने मिल-जुल कर अद्भूत योग किया। पर यह कहना सरलीकरण होगा कि दुनिया के दो बड़े धर्मो के अनुयायी सिर्फ रचनात्मक लेन देन कर रहे थे, सही बात यह हे कि वे हज़ार वर्ष से अधिक एक दूसरे से लड़ते भी रहे थे। इसी तरह के दूसरे सरलीकरण हैं कि लड़ते तो सिर्फ शासक थे, प्रजा प्रेम से रहती थी या हिन्दुओं और मुसलमानों को ब्रिटिश शासकों ने लड़ाया, अन्यथा वे तो शांति से रहना चाहते थे। विभाजन को लेकर भी सरलीकृत धारणाएं हैं, जो भारतीय समाज को सांप्रदायिक रिश्तों को समझने की कोशिश करने वाले मुझ जैसे जिज्ञासु को उलझन में डालती रही हैं। इन्हीं कुछ गुत्थियों को सुलझाने का मुझे मौक़ा मिला, जब पिछले दिनों मैंने प्रो. इश्तियाक से एक लंबी बातचीत की।

सभी जानते हैं, विभाजन ने एक करोड़ से भी अधिक परिवारों को प्रभावित किया था। बड़ी संख्या में लोग विस्थापित हुए या मारे गए। विभाजन में तो मुख्य रूप से पंजाब और बंगाल में बंटवारा हुआ था और प्रो. इश्तियाक ने पंजाब पर बहुत महत्वपूर्ण काम किया है। दोनों ओर से दर्जनों विस्थापितों से इंटरव्यू लेकर उन्होंने मौखिक इतिहास का दुर्लभ व मूल्यवान दस्तावेजीकरण किया है।

भारत में बहुत से लोग, जिनमें फैज़ान मुस्तफ़ा जैसे आधुनिक और असदुद्दीन ओवैसी जैसे शरीक हैं, तर्क देते हैं कि हिन्दुस्तान के मुसलमान अपनी मर्ज़ी से भारतीय हैं। उन्हें 1947 में मौक़ा मिला था कि वे पाकिस्तान जा सकते थे, पर वे अपनी धरती से प्यार करते थे, इसलिए उन्होंने भारत नहीं छोड़ा। मुझे इस स्थापना से हमेशा दिक्क़त होती है क्या पाकिस्तान से आने वाले सिख और हिन्दू अपनी धरती से प्यार नहीं करते थे। इस स्थापना से आज़ाद भारत के गांधी-नेहरु जैसे रोशन ख़्याल नेतृत्व के प्रयासों का अपमान होता है, जिनके कारण भारत से उस तरह से मुसलमानों की नस्ली सफाई नहीं हो सकी, जैसे पाकिस्तान से सिखों और हिन्दुओं की हुई। उन्होंने अपनी पंजाब वाली किताब का ज़िक्र किया, जिसमें उन्होंने विस्तार से मार्च 1947 में रावलपिंडी में सिखों पर मुसलमानों के हमलों का ज़िक्र किया है। जिसमें कई हजार सिक्ख मारे गए थे और हजारों परिवार उजड़कर पटियाला पहुंचे थे। यह आज़ादी के पहले की शुरुआती नस्ली सफाई थी। बाद में शेष पाकिस्तान में इसी पैटर्न की दूसरी कार्रवाई हुई और नतीजतन आज एक प्रतिशत से कम हिन्दू, सिख वहां हैं।

इसके बरक्स भारत में क्या हुआ? मार्च में जब सिख भागकर आए, तब ज़रूर नस्ली सफाई का एक दौर आया, जिसमें सिखों ने मुसलमानों को मालेरकोटला छोड़ पूरे पंजाब से खदेड़ दिया। याद रहे कि तब का पंजाब दिल्ली की सीमा तक था। पर जब तक नस्ली सफाई का सिलसिला दिल्ली तक पहुंचा, देश आज़ाद हो चुका था और बलवाईयों के लिए गांधी नेहरू एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने आए। गांधी तो सांप्रदायिक हिंसा के विरुद्ध अनशन पर बैठ गए और इसे तोड़ने के लिए उनकी एक शर्त यह भी थी कि हिन्दू और सिख बलात कब्ज़ा की गई अन्य संपत्तियों के साथ मस्जिदों को भी मुसलमानों को वापस सौंप दें। इस तरह का कोई प्रयास जिन्ना या लियाकत अली ख़ा द्वारा पाकिस्तान

गांधी तो सांप्रदायिक हिंसा के विरुद्ध अनशन पर बैठ गए और इसे तोड़ने के लिए उनकी एक शर्त यह भी थी कि हिन्दू और सिख बलात कब्ज़ा की गई अन्य संपत्तियों के साथ मस्जिदों को भी मुसलमानों को वापस सौंप दें। इस तरह का कोई प्रयास जिन्ना या लियाकत अली ख़ा द्वारा पाकिस्तान में नहीं किया गया। भारत में आज़ादी के बाद के रोशन ख़्याल नेतृत्व को इस बात का श्रेय दिया जाना चाहिए कि उसने नस्ली सफाई नहीं होने दी।

में नहीं किया गया। भारत में आज़ादी के बाद के रोशन ख़्याल नेतृत्व को इस बात का श्रेय दिया जाना चाहिए कि उसने नस्ली सफाई नहीं होने दी और अधिसंख्य मुसलमान देश में रुक सके।

इसी तरह, कैबिनेट मिशन को लेकर एक मिथ यह है कि यदि कांग्रेस ने उसे मान लिया होता तो विभाजन टल सकता था। पर प्रो. इश्तियाक से बात करे यह मिथ टूटता है। वह मानते हैं कि कैबिनेट मिशन की असफलता का मुख्य कारण जिन्ना की हठधर्मिता ही अधिक थी। प्रो. इतिशक भारत पाकिस्तान के उन बुद्धिजीवियों में हैं, जो विश्वास करते हैं कि यद्यपि सन 1947 के पहले की स्थितियां लौटाई नहीं जा सकतीं, पर यूरोपिय यूनियन जैसी व्यवस्था तो हो ही सकती है, जिसमें वीज़ा ख़त्म हो सकती है व्यापार निर्बाध हो जाए या साहित्य और संस्कृति की खिड़कियां खोलकर ताज़ी हवा के झोंकें आने दिए जाएं। हम दोनों ने इसी उम्मीद के साथ बातचीत ख़त्म की कि हमारे जीवन में ही यह दिन आएगा ज़रूर। ❑❑

रोज़गार ....

जेरियाट्रिक केयर स्पेशलिस्ट कैरियर के साथ सेवा

मातृ देवो भव: ...पितृ देवो भव:' के मायने अब काफी बदल चुके हैं। न्यूक्लिर फैमिलीज का ट्रेंड बढ़ने से लोगों के पास बुजुर्गों की देख रेख के लिए पर्याप्त समय नहीं होता है। एक अनुमान के मुताबिक, फिलहाल देश में सीनियर सिटीजंस की संख्या करीब 10 करोड़ है। वर्ष 2025 तक बुजुर्गों की आबादी 12 प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ने का अनुमान है। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2050 तक देश की कुल आबादी 60 साल से अधिक उम्र वालों की संख्या करीब 7.7 प्रतिशत हो जाएगी। यही वजह है कि सोसायटी में सीनियर सिटिजंस के सेहत की देखभाल के लिए जेरियाट्रिक केयरटेकर्स की ज़रूरत महसूस की जा रही है। ऐसे प्रोफेशनल्स को उम्रदराज़ लोगों की केयर और क्योर दोनों की अच्छी समझ होती है।

वर्क प्रोफाइल

जेरियाट्रि केयर स्पेशलिस्ट सप्ताह में तीन चार दिन सीनियर सिटीजंस के घर जाते हैं, उनसे बातें करते हैं। वे उन्हें शॉपिंग कराते हैं, उनके साथ क्वालिटी टाइम बिताते हैं जिससे बुजुर्गों का अकेलापन तो दूर होता ही है, उनमें जीने की उमंग भी पैदा होती है।

कोर्स एंड क्वालिफिकेशंस

साइकोलॉजी, फिजियोथेरेपी, जेरेंटोलॉजी, फिजिकल साइंस तथा एलायड हेल्थ साइंस में मास्टर्स डिग्री रखने वाले लोग एल्डरली केयर स्पेशलिस्ट यानि जेरियाट्रिक केयर प्रोफेशन के रूप में अपने कैरिअर को नया आयाम देने के साथ साथ सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी भी पूरी कर सकते हैं। इंडिया में जेरियाट्रिक केयर में पीजी डिप्लोमा और सर्टिफिकेट दो तरह के कोर्स उपलब्ध हैं। इसके अलावा, कई संस्थान पीजी और पीएचडी प्रोग्राम भी ऑफर कर रहे हैं। सोशल सांइस, आर्ट या मेडिसिन बैकग्राउंड के छात्र भी यह कोर्स कर सकते हैं। वहीं, एमबीबीएस करने वाले इसमें स्पेशलाइजेशन कर नई और अलग शुरुआत कर सकते हैं।

नौकरी के अवसर

आजकल कई प्राइवेट कंपनीज इस तरह की पेड सर्विस उपलब्ध करा रही हैं, जिसमे तहत जेरियाट्रिक प्रोफेशनलस बुजुर्गो के घर जाकर उनके स्वास्थ्य की देखरेख करते हैं। कुछ अस्पतालों में अब धीरे धीरे जेरियाट्रिक केयर वार्डस खुल रहे हैं, जहां बुजुर्गों को स्पेशलाइज्ड हेल्थ सर्विस उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अलावा, ओल्ड एज होम और एनजीओ में भी बेड साइड असिस्टेंट, नर्सिंग केयर, सुपरवाइजर, मैनेजर और रिसर्च असिस्टेंट के तौर पर जेरियाट्रिक केयर प्रोफेशनल्स की बहुत डिमांड है। चाहें, तो खुद का जेरियाट्रिक नर्सिंग होम भी शुरू कर सकते हैं। सोशल एण्ड कम्युनिटी सर्विस, नर्सिंग स्कूल्स और रिसर्च इंस्टीटयूटस में भी ऐसे लोगों के लिए जॉब की काफी संभावनाएं हैं।

सैलरी पैकेज

जेरियाट्रिक केयर फील्ड में युवाओं को कैरिअर की शुरुआत में हर माह 15 हजार से 25 हज़ार रुपये तक की जॉब आसानी से मिल जाती है। कुछ सालों के अनुभव के बाद ऐसे प्रोफेशनल्स की सैलरी 30 से 40 हजार रुपये तक पहुंच जाती है।

प्रमुख इंस्टीटयूटस

नेशनल इंस्टीटयूट्स ऑफ सोशल डिफेंस, दिल्ली।

http://www.nisd.gov.in

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस मेडिकल कॉलेज, उ.प्र.।

http://www.nscdmc.in

राजीव गांधी पैरामेडिकल इंस्टीटयूट, नई दिल्ली।

http://rgpcindia,com

इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी, दिल्ली।

http://www.ignou.ac.in

इस्लामी दुनिया

पेंटागन ने दिया पाकिस्तान को झटका

अमेरिका की ओर से पाकिस्तान को मिलने वाली सुरक्षा सहायता को ट्रंप सरकार ने निलंबित कर दिया था। बाइडेन की सरकार ने भी इस निलंबन को बरकरार रखने का फैसला लिया है। हालांकि, यह अभी तय नहीं है कि यह निलंबन भविष्य में हटेगा या नहीं। पेंटागन की ओर से कहा गया है कि राष्ट्रपति जो बाइडेन ने पाकिस्तान को दी जाने वाली सुरक्षा सहायता को निलंबित रखने का पिछली सरकार का फैसला बरकरार रखा है।

मलयेशिया : एक सुरंग में दो लाइट ट्रेनें भिड़ी

कुआलालंपुर : मलयेशिया के कुआलालंपुर में दो मेट्रो लाइट रेल ट्रेनें आपस में टकरा गई, जिस कारण 200 से ज़्यादा लोग हादसे में घायल हो गए। सोशल मीडिया पर हादसे की तस्वीर वायरल हो रही है। मलयेशिया की राजधानी कुआलालंपुर से ट्रेन दुर्घटना की खबर सामने आई है। यहां (24 मई) को एक सुरंग में दो लाइट रेल ट्रें (मैट्रो एवं ट्राम की विशेषता वाली ट्रेन) के बीच भीषण भिडंत हो गई। इस भयानक हादसे में 200 से ज़्यादा लोगों के घायल होने की ख़बर हैं जानकारी के अनुसार घायलों में तकरीबन 50 लोगों की हालत बेहद गंभीर है।

मुस्लिमों का अस्तित्व ख़त्म करना चाहता है चीन

शिनजियांग प्रांत में चीन सुनियोजित तरीक़े से उइगर मुस्लिम ही नहीं बलिक पूरे समाज के अस्तित्व को ख़त्म करने की योजना पर काम कर रहा है। क्योदो न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक, यहां पर अब मुस्लिमों की ऐसी जमात तैयार की जा रही है जिनकी विचारधारा पूरी तरह कम्युनिस्ट पार्टी की हो। उन्हीं के माध्यम से चीन अपनी छवि साफ करने का प्रयास कर रहा है। इसी के तहत पूर्व इमाम को चीन ने पहले अपने तरीक़े से चलाने की कोशिश की लेकिन जब वे नहीं माने तो उन्हें कट्टरपंथ फैलाने के आरोप में 2017 में गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया।

अयोध्या की मस्जिद का नक़्शा एडीए को सौंपा

इंडो इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन ने अयोध्या की मस्जिद प्रोजेक्ट के नक़्शे की ड्राइंग अयोध्या विकास प्राधिकरण (एडीए) में जमा कर दी। बताया गया कि 11 सेटों में नक्शे एडीए के उपाध्यक्ष विशाल सिंह को सौंपे गए। प्रॉसेसिंग फीस के रूप में 89 हज़ार रूपये भी जमा करा दिए हैं।

अस्पतालों में आग की लपटों से निकलते सवाल

अरविंद मिश्रा

कोरोना काल हो या सामान्य वक़्त, अस्पताल हमारी ज़िंदगी का अहम हिस्सा बन गए है। पिछले एक साल सके कोरोना जनित आपदा ने अस्पतालों और स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे के प्रति हमारे नज़रिए को मथने का काम किया है। एक ओर जहां कोरोना के इस अदृश्य ज्वालामुखी ने चिकित्सा की सार्वजनिक व्यवस्था को हतोत्साहित करने वाली नीतियों से लेकर निजी अस्पतालों की मनमानी को उजागर किया है, वहीं स्वास्थ्य क्षेत्र को नई संजीवनी देने के प्रयासों को भी बल दिया है। निस्संदेह कोरोना की इस लड़ाई में अस्पतालों की भूमिका अग्रणी हैं। संक्रमितों की बढ़ती संख्या की वजह से अस्पताल अपनी क्षमता से कई गुना अधिक काम कर रहे हैं। जब संक्रमण का दायरा प्रतिदिन चार लाख की संख्या को पार कर रहा है, ऐसे समय में, अस्पतालों, कोविड देखभाल केन्द्रों और एकांतवास केन्द्रों में आगज़नी की बढ़ती घटनाएं नई चुनौती खड़ी कर रही हैं। पिछले कई सालों के मुक़ाबले इस वर्ष अस्पतालों में आगज़नी की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। हालात की गंभीरता को देखते हुए केन्द्रीय गृह मंत्रालय को राज्य सरकारों को निर्देश देना पड़ा है कि कोविड अस्पतालों में आग की घटनाएं रोकने के लिए पर्याप्त इंतज़ाम किए जाएं। साथ ही यह भी कि बढ़ती गर्मी को देखते हुए अस्पतालों में आग लगने की घटनाओं से निबटने के लिए पूर्व तैयारी रखी जाए।

अस्पतालों में आग की घटनाओं की भयावहता का अंदाज़ा विगत कुछ महीनों के भीतर हुई दर्दनाक घटनाओं से लग जाता है। अगस्त 2020 से अब तक देश के अलग अलग हिस्सों में अस्पतालों में आगज़नी की दो दर्जन से अधिक बड़ी घटनाएं सामने आ चुकी है। कुछ समय पहले गुजरात के भरूच शहर में कोविड अस्पताल में आग लगने से अठारह लोगों से मौत हो गई थी। सूरत में पिछले महीने आयुष अस्पताल के आइसीयू वार्ड में आग लगने से चार कोविड मर गए। पिछले महीने ही मुंबई के एक अस्पताल में आग से पन्द्रह लोगों को जान गंवानी पड़ी। वर्ष के शुरुआत में ही सूबे के भंडरा जिले में सरकारी अस्पताल में आग लगने से दस नवजात शिशुओं के मौत की विचलित करने वाली तस्वीरें सामने आईं। पिछले महीने महाराष्ट्र के ही ठाणे और नागपुर में ऐसे ही हादसे हुए और कोविड मरीज़ मारे गए। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में निजी अस्पताल में आग पांच कोरोना संक्रमित मरीज़ों को लील गई। यह फेहरिस्त यही ख़त्म नहीं हो जाती। चिकित्सा केन्द्रों में गंभीर हादसों का रूप लेती आग के कई अहम कारक हैं। इनमें मानवीय लापरवाही और अस्पताल के ढांचे को विकसित करते समय अग्नि सुरक्षा उपायों की अनदेखी सबसे प्रमुख हैं। इन कारकों को हम तात्कालिक और दीर्घकालिक रूप में पाते हैं।

इस दो राय नहीं कि कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच कोविड अस्पतालों पर क्षमता से कई गुना बोझ बढ़ा है। विशेषज्ञों के मुताबिक दूसरी लहर के साथ कई अस्पताल बिस्तर, चिकित्सा उपकरण और कुछ हद तक कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने में सफल रहे हैं। लेकिन समानांतर रूप से आग से होने वाले हादसों से बचाव के लिए इंतज़ाम दुरुस्त करने को कहीं प्राथमिकता नहीं दी गई। ज़्यादातर अस्पतालों में बिजली का भार अचानक बढ़ जाने से आपूर्ति व्यवस्था अचानक ध्वस्त हो रही है। अस्पतालों में केन्द्रिकृत वातानुकूलन संयंत्र, ऑक्सीजन संयंत्र सहित दूसरे कामों में बड़े पैमाने पर बिजली की खपत बढ़ गई है। ऐसे में तारों पर भार बढ़ता है, वे ज़्यादा गरम हो जाते हैं और इसी से चिंगारी पैदा होती है। यही आग लगने का बड़ा कारण बनती है। कई स्थानों पर विद्युत के अति संवेदनशील सुचालक मेडिकल उपकरणों के संचालन में ग़ैर प्रशिक्षित अमले को लगा दिया जाता है। कई बार यह छोटी सी लापरवाही भी बड़े हादसे को न्यौता देने के लिए पर्याप्त होती है। आगज़नी की घटनाओं को तकनीकी गड़बड़ी जैसे तारों में चिंगारी आदि क़रार देकर असल वजहों से मुंह मोड़ लेने की प्रवृत्ति से समस्या जस की तस बनी रहती है।

इस विपत्ति काल में मेडिकल ऑक्सीजन की मांग तेज़ी से बढ़ी है। इसके उपयोग और परिवहन से जुड़ी सावधानियां बहुत ज़रूरी हैं। ऑक्सीजन अत्यंत ज्वलनशील गैस होती है और एक चिंगारी भी बड़ा विस्फोट कर सकती है। विशेष रूप से ग़ैर सरकारी संगठनों द्वारा बनाए जा रहे कोविड केन्द्रों में जहां ऑक्सीजन सिलेंडर उपयोग में लाए जा रहे हैं, वहां आग से निपटने के पुख़्ता उपायों पर बल देना होगा। पिछले एक माह के भीतर देश के कई हिस्सों में कोविड अस्पतालों में हुई आगज़नी की घटनाएं सावधानी बरतने का संकेत कर रही हैं। तात्कालिक उपायों के रूप में अस्पतालों को बिना समय गंवाए आग बुझाने के लिए पर्याप्त अग्निशमन यंत्रों जैसे फायर वॉल, ऑक्सीजन, एक्सटिंग्विशर, स्प्रिंकलर, फायर हाइड्रेंट, हौजरील, फायर अलार्म, दमकल, जल की उपलब्धता व आपूर्ति की व्यवस्था को समय रहते दुरुस्त करना चाहिए। स्थानीय प्रशासन का यह दायित्व बनता है कि संकट की इस घड़ी में अस्पतालों में अग्निशमन, जल की उपलब्धता और आपदा प्रबंधक कार्यबल की तैनाती जैसी बुनियादी ज़रूरतों का इंतज़ाम करे। आग की घटनाओं से बचाने के लिए अग्निशमन दस्ते द्वारा समय-समय पर मॉकड्रिल के ज़रिए लोगों में जागरुकता के प्रयास किए जाते हैं। बेहतर होगा कि मॉकड्रिल कार्यक्रमों में अस्पतालों के आसपास रहने वाले लोगों को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाए। आपदा प्रबंधन का कोई भी कार्य जनसहभागिता के बिना अधुरा ही माना जाता है।

ऐसा नहीं है कि हमारे यहां नियम और मानकों का अभाव है। भारतीय मानक ब्यूरो ने तो बाक़ायदा भवन निर्माण संहिता तैयार बना रखी है। हालांकि अनिवार्य न होने के कारण इन मानकों को लागू करना या न करना राज्यों की इच्छा पर निर्भर करता हैं दो साल पहले यह मुद्दा लोकसभा में उठ भी चुका हैं तब राष्ट्रीय भवन निर्माण संहिता को अनिवार्य बनाने की मांग की गई थी। 1970 में तैयार राष्ट्रीय भवन संहिता में 1983, 1987, 2005 में संशोधन कर उसे प्रभावी बनाया गया। फिर 2016 में इसे संशोधित किया गया। इस संहिता के भाग-4 में अस्पताल जैसे संस्थानों में अग्निशमन जैसे हादसों से बचाव के लिए विस्तृत निवारक उपाय बताए गए हैं। इसके लिए भवन सामग्री और उसकी परीक्षण पद्धतियों के मापदंडों के लिए लगभग एक हज़ार तीन सौ मानकों का उल्लेख है। एक साधारण व्यक्ति भले ही भवन निर्माण संहिता के प्रति जागरुक न हो, लेकिन अस्पतालों और सार्वजनिक भवनों के निर्माण के दौरान इसे अनिवार्यता के साथ लागू करना अनिवार्य होना चाहिए। दुर्भाग्य से राज्यों के लोक निर्माण विभागों को राष्ट्रीय भवन संहिता के प्रावधानों के प्रति जो गंभीरता दिखानी चाहिए, वह नदारद ही नज़र आती है। कुछ मुट्ठीभर सरकारी और निजी अस्पतालों को छोड़ दें, तो इनके निर्माण के दौरान अग्नि सुरक्षा की रस्मअदायगी के अलावा यहां राष्ट्रीय भवन निर्माण संहिता के प्रावधानों का पालन नहीं किया जाता है।

अस्पतालों में होने वाली आग की घटनाओं को फारेंसिक विशेषज्ञ मानवीय लापरवाही और नियमों के प्रति उदासीनता का नतीजा क़रार देते हैं। बावजूद इसके कुछ मामलों को छोड़ दें तो राज्यों की एजेंसियां से मिलीभगत के कारण दोषियों पर सख़्त कार्रवाई नहीं हो पाती है। यदि सक्षम प्राधिकार ऐसे मामलों में सख़्त कार्रवाई करे तो निश्चित रूप से मानवीय जीवन को संकट में डालने वाले लोगों व संस्थानों की जवाबदेही तय की जा सकेगी। अग्निकांड की घटनाओं को लेकर बरती गई अस्पताल प्रबंधनों और स्थानीय प्रशासन की ज़रा सी लापरवाही नई चुनौती को जन्म देती है। बेहतर होगा अस्पतालों में अग्निशमन से जुड़ी बुनियादी आवश्यकताओं को समय रहते दुरुस्त कर लिया जाए। ध्यान रहे, अक्सर विपत्ति एक साथ कई मोर्चे पर आती है। संकट के समय चुनौतियों से मुंह फेरने के बजाय उनका समाधान ही सबसे अच्छा विकल्प है।❑❑

अस्पतालों में होने वाली आग की घटनाओं को फारेंसिक विशेषज्ञ मानवीय लापरवाही और नियमों के प्रति उदासीनता का नतीजा क़रार देते हैं। बावजूद इसके कुछ मामलों को छोड़ दें तो राज्यों की एजेंसियां से मिलीभगत के कारण दोषियों पर सख़्त कार्रवाई नहीं हो पाती है। यदि सक्षम प्राधिकार ऐसे मामलों में सख़्त कार्रवाई करे तो निश्चित रूप से मानवीय जीवन को संकट में डालने वाले लोगों व संस्थानों की जवाबदेही तय की जा सकेगी। अग्निकांड की घटनाओं को लेकर बरती गई अस्पताल प्रबंधनों और स्थानीय प्रशासन की ज़रा सी लापरवाही नई चुनौती को जन्म देती है। बेहतर होगा अस्पतालों में अग्निशमन से जुड़ी बुनियादी आवश्यकताओं को समय रहते दुरुस्त कर लिया जाए। ध्यान रहे , अक्सर विपत्ति एक साथ कई मोर्चे पर आती है। संकट के समय चुनौतियों से मुंह फेरने के बजाय उनका समाधान ही सबसे अच्छा विकल्प है।

तीसरी लहर से पहले उसे पहचाने

चंद्रकात लहारिया

भारत में कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर की अवश्यंभाविता को पहचानने में नाकाम रहने के कारण एक राष्ट्र के रूप में हमने अपनी उंगलियां जला लीं और महामारी के विरुद्ध जीत की घोषणा करने में बहुत जल्दबादी की। ऐसा मानने का कोई कारण नहीं था। इतिहास सबूतों से भरा है कि महामारी इतनी आसानी से ख़त्म नहीं होती है। 1918-20 में, इन्फ्लूएंजा महामारी की चार लहरें आई थी, जिनमें से दूसरी लहर दुनियाभर के लोगों पर सबसे बुरी रही। कोविड-19 महामारी में, फरवरी मार्च 2019 तक दुनियाभर के लगभग सभी प्रमुख देशों (चीन अपवाद है, जिसे केवल एक लहर का सामना करना पड़ा) को दो या तीन लहरों का सामना करना पड़ा, जहां पहली लहर की तुलना में दूसरी लहर में ज़्यादा मामले सामने आए। दूसरी लहर के बीच कुछ दिनों पहले भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिकों सलाहकार ने कहा कि भारत में कोविड-19 की तीसरी लहर अवश्यंभावी है। उन्होंने कहा कि यह अनुमान लगाना संभव नहीं है कि तीसरी लहर कब आएगी और कितनी गंभीर होगी। महामारी विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित यह घोषणा सही है। जब तक अतिसंवेदनशील आबादी रहती है, तब तक लहरों का ख़तरा बना रहता है।

फरवरी 2021 की शुरुआत में जारी भारत के तीसरे देशव्यापी सीरो सर्वेक्षण रिपोर्ट में पाया गया था कि केवल 21 प्रतिशत लोगों में पिछले संक्रमण के प्रमाण मिले, जैसा कि उनके रक्त नमूनों में एंटीबॉडी के माध्यम से पहचाना गया था। अनिवार्य रूप से इसका मतलब था कि 79 प्रतिशत भारतीय अब भी वायरस के लिए अतिसंवेदनशील है, जो अब भी आसपास है। महामारी को रोकने का एकमात्र तरीक़ा है कि हर क्षेत्र में आबादी का एक बड़ा हिस्सा वायरस के ख़िलाफ़ प्रतिरक्षा विकसित करे। यह प्रतिरक्षा स्वाभाविक संक्रमण में व्यक्ति के बीमार होने और मृत्यु का ख़तरा रहता है इसलिए टीकाकरण बेहतर तरीक़ा है, क्योंकि यह रोग या मृत्यु के जोखिम को बिना प्रतिरक्षा प्रदान करता है।

ऐसी भी चर्चाएं हैं कि तीसरी लहर में बच्चों के प्रभावित होने की अधिक आशंका है। इस धारणा की पुष्टि करने के लिए कोई वैज्ञानिक अध्ययन नहीं है, यह संभव है कि कुल संख्या के संदर्भ में, बच्चों में संक्रमण की दर में कोई वृद्धि नहीं हो, पर तीसरी लहर में कुल नए संक्रमण के अनुपात में बच्चों की हिस्सेदारी अधिक हो सकती है। अब तक अधिकांश संक्रमण वयस्क और बुज़ुर्ग आबादी में हुए हैं। यह वही आयु वर्ग है, जिसका टीकाकरण हो रहा है इसलिए वयस्कों में अतिसंवेदनशील आबादी में गिरावट की संभावना है, जबकि 18 से कम आयु वर्ग की आबादी बिना प्रतिरक्षा के रहेगी और इस तरह अतिसंवेदनशील होगी।

किसी भी मामले में तीसरी लहर के प्रभाव को कम करना ही एकमात्र तरीका है। इसके लिए कुछ कदम उठाना ज़रूरी है। सबसे पहले, केन्द्र और राज्य सरकारों को तीसरी लहर की प्रतिक्रिया योजना तैयार करनी चाहिए और एक वर्ष या महामारी समाप्त होने तक बाद की सभी लहरों को ध्यान में रखते हुए मध्यम अवधि की योजना तैयार करनी चाहिए।

किसी भी मामले में तीसरी लहर के प्रभाव को कम करना ही एकमात्र तरीका है। इसके लिए कुछ क़दम उठाना ज़रूरी है। सबसे पहले, केन्द्र और राज्य सरकारों को तीसरी लहर की प्रतिक्रिया योजना तैयार करनी चाहिए और एक वर्ष या महामारी समाप्त होने तक बाद की सभी लहरें को ध्यान में रखते हुए मध्यम अवधि की योजना तैयार करनी चाहिए। ऐसी योजना को वित्तीय आबंटन और समय-समय पर निगरानी संकेतकों द्वारा समर्थित होना चाहिए। दूसरा, भारत के हर राज्य और जिले में स्वास्थ्य प्रणालियों और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को मज़बूत करने और बढ़ावा देने के लिए एक अलग रोडमैप बनाना चाहिए। महामारी की शुरूआत के बाद से स्वास्थ्य प्रणाली को मज़बूत करने के सभी वादों पर फिर से कार्रवाई शुरू करने की आवश्यकता है। तीसरा, ऑक्सीजन बेड तैयार करने क लिए देशभर में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों (पीएचसी) को सक्रिय करना चाहिए। प्रत्येक पीएचसी में छह बेड हैं और भारत भर में 30,000 पीएचसी हैं और इन्हें सक्रिय करने का मतलब होगा 1,80,000 ऑक्सीजन बेड। चौथा, सुनिश्चित आपूर्ति के ज़रिये टीकाकरण का तेज़ी से विस्तार किया

बाक़ी पेज 11 पर

कोख में ही बच्चों का सौदा, पुलिस ने किया पर्दाफाश

दिल्ली से सटे गाज़ियाबाद में पांच रिश्तेदारों का एक ऐसा गिरोह सक्रिय है, जो परिवार की महिलाओं की कोख भरते ही बच्चों का सौदा कर देता है। बच्चे के जन्म लेने के बाद बोद देने की आड़ में 20 हज़ार से एक लाख रुपये में बिचौलिये के ज़रिये बेच देता है। यह गिरोह अब तक आधा दर्जन से ज़्यादा बच्चों का सौदा कर चुका है। 12 मई को लोनी की डाबर तालाब कालोनी में रहने वाले एक दंपति ने पुलिस से अपने दुधमुंहें बेटे के चोरी होने की शिकायत की, तो जांच में पूरे प्रकरण का पर्दाफाश हुआ। पुलिस ने इस मामले में करीब एक दर्ज महिला-पुरुष को हिरासत में लिया है। पुलिस जल्द ही पूरे प्रकरण से पर्दा हटाएगी।

मूल रूप से गुलावटी बुलंदशहर का रहने वाला फरियाद करीब चार माह पहले लोनी के डाबर कालोनी में एक किराये के कमरे में पत्नी व दो बेटियों के साथ रहने आया। वह भीख मांगकर परिवार चलाता है। 12 मई की दोपहर में उसने आरोप लगाया कि दो युवक उसके कमरे में पहुंचे और उसके 14 दिन के दुधमुंहें बेटे के चुरा ले गए। पुलिस ने उसकी शिकायत पर 13 मई को अज्ञात आरोपियों के ख़िलाफ़ रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की। उसमें चोरी के बजाय बच्चे को बेचने का मामला सामने आया। इस पर पुलिस ने दंपति से अलग-अलग पूछताछ की, तो परत-दर-परत मामला खुलता चला गया। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि पूछताछ में पता चला है कि आरोपित दंपति ने अपने रिश्तेदारों की मदद से खुद ही बच्चे को बेच दिया था, लेकिन तय रक़म नहीं मिलने के बाद चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई है।

पुलिस की जांच में सामने आया कि आरोपित दंपती के एक रिश्तेदार को करीब सात साल पहले दिल्ली में तीसरा बच्चा हुआ। उसने डॉक्टर से बच्चे को पालने में असमर्थता जताई। इस पर डॉक्टर ने एक ज़रूरतमंद को बच्चा गोद दिला दिया। उसने खुश होकर उसे करीब 20 हजार रुपये दिए। उसके बाद से उसने इसे धंधा बना लिया। मामा, फूफा, चाचा आदि रिश्तेदारों के लड़कों को अपने साथ मिलाकर गिरोह शुरू कर दिया। इस समय पांच दंपति (आपस में रिश्तेदार) इस गिरोह में शामिल हैं, जो लोनी, डासना और गुलावटी में रहते हैं। इन लोगों ने एक बिचौलिये को भी गिरोह में शामिल किया है। परिवार की महिलाएं जैसे ही गर्भ धारण करती हैं यह लोग बिचौलिये को इसकी जानकारी देकर ग्राहक ढूंढने में लगा देते हैं। बच्चे के जन्म के बाद उसे गोद देने की आड़ में बेच देते हैं। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि अब तक यह गिरोह सात-आठ बच्चों को बेच चुका है।

पुलिस के विश्वसनीय सूत्रों ने बताया कि पुलिस ने पांच महिलाओं सहित करीब एक दर्जन लोगों को हिरासत में लिया है। उनमें बिचौलिया भी शामिल है। गाज़ियाबाद के विजय नगर क्षेत्र का बताया जा रहा है। पुलिस अब तक यह पता नहीं लगा सकी है कि इन लोगों ने बच्चों को किसे बेचा हैं बच्चों का पता लगाना पुलिस के लिए चुनौती है। फरियाद की पत्नी ने बताया कि 12 मई को दो युवक आए। उसके हाथ में एक लाख रुपये रखा। उसके बाद उसे कोई नशीला पदार्थ देकर बेटे व रुपये दोनों लेकर फरार हो गए। उसके बाद उन्हें कुछ याद नहीं है। वहीं पड़ोसियों ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि इस दंपती के यहां अक्सर नशेड़ी जुटते थे। उन्होंने भी बच्चे के बेचे जाने की आशंका ज़ाहिर की है। इन सभी तथ्यों से इस बात की पुष्टि हो रही है कि दंपति ने बच्चे को बेचा है। ❏❏

ख़ास ख़बरें

देउबा के नेतृत्व में सरकार की कोशिशें तेज़

काठमांडो : नेपाल में विपक्षी दलों ने सुप्रीम कोर्ट में रिट याचिका दायर कर राष्ट्रपति बिद्यादेवी भंडारी द्वारा प्रतिनिधि सभा भंग करने के फैसले को असांविधानिक बताया हैं खास बात यह है कि जिन 146 सांसदों ने हस्ताक्षर के साथ अदालत का दरवाज़ा खटखटाया है उनमें प्रतिद्वंदी वपीएम रहे केपी शर्मा ओली गुट के 26 समर्थक भी शामिल हैं। विपक्षी दलों ने शेरबहादुर देउबा के नेतृत्व में सरकार बनाने का दावा भी पेश किया।

मालवाहक जहाज में आग, 25 सदस्यों को बचाया

कोलंबो : श्रीलंका की नौसेना ने दो भारतीयों समेत क्रू मेंबर्स के सभी 25 सदस्यों को एक कंटेनर जहाज पर पिछले दिनों कोलंबो के तट से दूर आग लग गई थी। श्रीलंकाई नौसेना ने एक कोलंबो तट के पास कंटेनर जहाज में आग लगने के बाद दो भारतीय समेत चालक दल के सभी 25 सदस्यों को बचा लिया। आग बुझाने का काम अभी जारी है।

प्राइवेसी पॉलिसी नहीं बदलेंगे : वाट्सऐप

वाटसऐप ने नई प्राइवेसी पॉलिसी को लेकर आईटी मंत्रालय को जवाब दिया है। वाट्सऐप ने कहा है कि हम अपनी पॉलिसी में कोई भी बदलाव नहीं करेंगे। जब तक पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन लाॅ नहीं आ जाता हम अपनी नई प्राइवेसी पॉलिसी को लेकर लोगों को रिमाइंड कराते रहेंगे। साथ ही वाट्सऐप ने ये भी कहा कि नई पॉलिसी किसी भी यूजर के पर्सनल मेसेज में छेड़छाड़ या बदलाव के लिए नहीं है।

तख़्तापलट के बाद पहली बार कोर्ट में सू की

म्यांमार की सत्ता से हआई गई नेता आंग सान सू की अदालत में पेश हुई। एक फरवरी के तख़्तापलट के बाद से देशद्रोह के लिए उकसाने के आरोप का सामना करने के लिए उनकी पहली व्यक्तिगत पेशी हुई। उन पर राजद्रोह का आरोप सबसे गंभीर है, लेकिन उन पर राज्य के गुप्त कानून का उल्लंघन करने और कोरोना वायरस रोकथाम उपायों को तोड़ने का भी आरोप है। तख़्तापलट के बाद से 75 वर्षीय सू की नज़रबंद है। अगली सुनवाई 7 जून को होगी।

ममता बोली बंगाल के साथ फिर भेदभाव

बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि 'यास' चक्रवात से मुकाबले के लिए केन्द्र सरकार ने अग्रिम सहायता राशि के तौर पर केवल 400 करोड़ को मंज़ूरी दी है जबकि बंगाल की तुलना में कम जनसंख्या घनत्व वाले राज्यों जैसे ओडिशा और आंध्र को 600 करोड़ रुपये दिए जा रहे हैं। बंगाल के साथ लगातार भेदभाव किया जा रहा है।

वुज़ू, नमाज़ और जिस्मानी सेहत

(1)

तिब्बी नुक्तए नज़र से कोलेस्ट्रोल या चर्बी को (जो कि शिरयानों में तंगी पैदा करती है) को कम करने का सबसे बड़ा और बेहतर ज़रीआ वरजिश है और इस वरज़िश में बाक़ाएदगी बहुत ज़रूरी है बल्कि इससे अस्ल मक़सद इसी सूरत में हासिल हो सकता है जबकि यह दिन में कई बार की जाए। क्योंकि हम दिन में उतनी बार खाना खाते हैं उतनी ही बार कोलेस्ट्रॉल यानि चर्बी की मिक़दार हमारे खून में आम सतह से बुलंद हो जाती है और खून गाढ़ा हो जाता है और यही समय है जबकि चर्बी शिरयानी में बैठती है। अगर यह अच्छी तरह जम जाए तो उसका उखड़ना निहायत दुश्वार हो जाता है आमतौर पर इतनी ज़्यादा और इतनी बार वरजिश सिवाए उन लोगों के जो मज़दूरी करते या खेती बाड़ी करते हैं, बिल्कुल नामुमकिन है। इतनी दफ़ा, हल्की फुल्की वरजिश सिर्फ नमाज़ ही में मुमकिन है।

अल्लाह तआला ने पांच वक्त की नमाज़ फर्ज़ करके हम पर बड़ा एहसान फरमाया है। नमाज़ जहां हमें रूहानी उरूज और दिल का सकून अता करती है और पाकीज़गी के दायरे में दाख़िल करती है वहां यह जिस्मानी सेहत के लिए भी बहुत मददगार है जिस्म को चाकोचौबन्द रखने के लिए, जिस्मानी तकलीफ और जोड़ों की बीमारी से बचाने और गिज़ा हज़्म करने में नमाज़ बहुत मुअस्सिर किरदार अदा करती है। इसके अलावा जिस्मानी सेहत के लिए नमाज़ का एक फायदा यह भी है कि यह हमारे खून में कोलेस्ट्रॉल यानि चर्बी को कम करने की किसी हद तक बाइस बनती है। आगे चलकर यह बात वाज़ेह हो जाएगी कि नमाज़ किस तरह मुखतलिफ अमराज़, खासकर दिल के दौरों और फालिज से हमें बचाती है।

मुनासिब होगा कि यहां यह तिब्बी नुक्ता समझ लिया जाए कि दिल का दौरा साठ साल की उम्र के बाद पड़े तो उमूमन ज़्यादा ख़तरनाक नहीं होता क्योंकि उम्र के तक़ाज़े से जूं जूं दिल की अपनी शिरयानें तंग होना शुरू होती हैं, अल्लाह तआला की कुदरत के साथ यह शिरयानें निकलती हैं, तो ज़रूरत के वक्त खून फराहम करने में मदद देती है। इसे इम्दादी दौराने खून कहते हैं, इसलिए बुढ़ापे मेंदिल के दौरे ज़्यादा ख़तरनाक नहीं होते।

आजकल कम उम्र ही में शिरयाने तंग हो जाने की वजह से दिल के दौरे पड़ने लगते हैं। इस उम्र में दिल का दौरा ज़्यादा खतरनाक होता है, क्योंकि नई इमदादी शिरयाने नहीं निकल पातीं। उन शिरयानों को निकालने के लिए मुतवाज़िन रोजमर्रा वरजिश की ज़रूरत है और वह वरजिश नमाज़ में किसी कदर इबादत के बतौर मौजूद है। यकीन है कि सही तौर पर नमाज़ काएम करने से हमारी नौजवान नस्ल में दिल के दौरों का रूझान कम हो सकता है। अगर यह दौरा पड़ जाए तो जैसे ही डाक्टर मरीज़ से चलने फिरने की इजाज़त दे उसे नमाज़ कायम करनी चाहिए और आहिस्ता आहिस्ता कसरत से नवाफ़िल पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। यहां यह अर्ज़ करना भी ज़रूरी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के इरशाद के मुताबिक अल्लाह तआला का ज़्यादा से ज़्यादा कुर्ब हासिल करने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा नवाफ़िल पढ़नी चाहिए। इससे रूहानी और जिस्मानी दोनों फायदा हासिल होता है।

नमाज़ जहां हमें रूहानी उरूज और दिल का सकून अता करती है और पाकीज़गी के दायरे में दाख़िल करती है वहां यह जिस्मानी सेहत के लिए भी बहुत मददगार है जिस्म को चाको-चौबन्द रखने के लिए, जिस्मानी तकलीफ और जोड़ों की बीमारी से बचाने और गिज़ा हज़्म करने में नमाज़ बहुत मुअस्सिर किरदार अदा करती है।

अगर आप ग़ौर करें तो नमाज़ों की तरतीब से ही मन्शाए इलाही ज़ाहिर होता है। मिसाल के तौर पर जब पेट ख़ाली होता है तो रकतओं की तादाद कम होती है जैसे फज्र, अस्र मग़रिब की नमाज़ें। मगर जब खाने के बाद खून में कोलेस्ट्रॉल ज़्यादा हो जाती है और अगर दौराने खून सुस्त हो तो खून की नालियों में उसके बैठने के इमकानात ज़्यादा हो जाते हैं। लिहाज़ा वरजिश ही इसका इलाज है। यही वजह है कि माहे रमज़ान में इफ्तारी के बाद नमाज़े इशा में बीस तरावीह का इजाफा किया जाता है क्योंकि रोज़ा इफ्तार करने के बाद उमूमन ज़्यादा खाना खाया जाता है। अगर इबादत की शक्ल में वरजिश की सूरत काएम न रहे तो सोते हुए खून में कोलेस्ट्रॉल की ज़्यादती की वजह से शिरयानों में गार के बैठने का ज़्यादा इमकान होता है।

नमाज़ अगर सही अंदाज़ में अदा की जाए तो हर मर्द व औरत के लिए इबादत के साथ-साथ निहायत मुतवाज़िन और मुनासिब वरजिश का काम देती है। उमूमन नमाज़ में मुन्दर्जा ज़ैल कोताहियां सरज़द होती हैं जिनकी वजह से इसकी तिब्बी अहमियत कम हो जाती है।

1. हम रुकूअ में झुकी कमर को सीधा यानि ज़मीन को मुतवाज़ी नहीं रखते।
2. अपने हाथ घुटनों पर रखकर सज्दे में नहीं जाते। (जो सज्दे में जाने का मसनून तरीक़ा है)।
3. सज्दे में कोहनियां ज़मीन पर लगा देते हैं और हथेलियों पर बोझ नहीं डालते।
4. मर्द सज्दे में रानों को पेट के साथ लगा लेते हैं और इस तरह पेशानी को ज़मीन पर घुटनों के करीब ही रख लेते हैं।
5. सज्दे से उठते वक्त हाथ घुटनों के ऊपर नहीं रखते (जो खड़े होने का सही तरीक़ा है) बल्कि ज़मीन पर हाथ रखकर बैठते हैं।
6. सलाम फेरते वक्त गर्दन को पूरी तरह नहीं मोड़ते।

हमारी यह सब कोताहियां मकरूहाते नमाज़ हैं जिनसे मना किया गया है। अगर हम रसूले करीम सल्ल० के इरशाद के मुताबिक़ सही तरीके से नमाज़ अदा करें तो जिस्म का कोई उज़्व ऐसा नहीं जिसकी अच्छे तरीके से हल्की फुलकी वरजिश न हो जाए। अज़्लात की हरकत, उनकी सेहत और दौराने खून के लिए ज़रूरी है। नमाज़ की मुख़्तलिफ़ हालतों में जो जो वरजिश होती है उसकी तफसील हम तरह है।

तकबीर : नीयत बांधते वक्त कोहनी के सामने के अज़्लात और कंधे के जोड़ के अज़्लात हिस्सा लेते हैं।

क़याम : हाथ बांधते वक्त कोहनी के आगे खींचने वाले पुट्ठे और कलाई के आगे और पीछे खींचने वाले पुट्ठे हिस्सा लेते हैं, जबकि बाक़ी किस्म के पुट्ठे सीधा खड़े होने की हालत में अपना मामूल का काम अदा करते हैं।

रुकूअ : रुकूअ में जिस्म के तमाम पुट्ठों की वरजिश होती है। इसमें कूल्हे के जोड़ पर झुकाव होता है (जारी)

नूरे क़ुरआन

(सूरा ए गाशियह नं॰ 88)

अनुवाद और व्याख्या : शैख़ुल हिन्द र.अ.

और सब ओर कालीन फैले पड़े हैं।

ताकि जिस समय और जिस स्थान पर चाहें वहां आराम करें और एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की तकलीफ न उठायें।

तो क्या वे लोग ऊंट को नहीं देखते कि कैसे बनाये गये हैं।

कि आकृति और विशेषता दोनों और जानवरों के मुक़ाबले में। इसमें विचित्र हैं जिनका विस्तार अज़ीज़ी तफ़सीर में देखा जा सकता है।

और आसमान को कि कैसा ऊंचा किया गया है।

बिना सुतून और खम्बों के।

और पहाड़ों को कि कैसे खड़े कर दिये गये।

कि तनिक भी अपने स्थान से नहीं हिलते।

और ज़मीन को कि कैसी साफ बिछाई गयी है।

गोल होने के बावजूद बिछी हुई ज्ञात होती है, इसलिए उस पर रहना-सहना आसान हो गया है। यह सब अल्लाह की क़ुदरत की दलीलें थी, अर्थात् अचंभा है कि इन चीज़ों को देखकर अल्लाह की क़ुदरत और उसके उचित प्रबंध को नहीं समझते, जिससे मौत के बाद दोबारा जीवित करने पर उसका शक्तिशाली होना और आख़िरत के विचित्र प्रबंध का संभव होना समझ में आ जाता है और विशिष्टता इन चीज़ों की इस कारण है कि अरब के लोग बहुत जंगलों में चलते-फिरते थे। इस समय उनके सामने यही चार चीज़ें अधिक होती थीं, सवारी में ऊँट, ऊपर, आसमान, नीचे ज़मीन और चारों ओर पहाड़, इसलिए इन्हीं लक्षणों में विचार करने को कहा गया।

सो आप उपदेश देते रहिए आप तो केवल उपदेश ही देने वाले हैं, आप उन पर दारोग़ा नहीं है।

अर्थात् जब ये लोग सबूत मिलने पर भी विचार नहीं करते, तो आप भी इनकी चिंता में अधिक न पड़े, बल्कि केवल उपदेश कर दिया कीजिये, क्योंकि आप उपदेश देने और समझाने के लिए ही भेजे गये हैं। अगर यह नहीं समझते तो कोई आप इन पर दारोग़ा बनाकर तो नहीं भेजे गये कि जबरन मनवाकर छोड़ें और उनके दिलों को बदल डालें। यह काम तो अल्लाह ही का है जो हृदयों को बदलता है।

रुकू नं॰ 1

हाँ मगर जो मुंह मोड़ेगा और इनकार करेगा तो अल्लाह उस पर बड़ा अज़ाब करेगा निःसंदेह हमारे पास ही उनको आना होगा, फिर निःसंदेह हमारा ही काम उनसे हिसाब लेना है।

अर्थात् जिसने अल्लाह के आदेश से मुंह मोड़ा और उसकी आयतों का इंकार किया, वह आख़िरत के बड़े अज़ाब और अल्लाह की सख़्त सज़ा से बच नहीं सकता। वास्तव में उनको एक दिन हमारी ओर लौटना है और हमको उनसे रत्ती-रत्ती का हिसाब लेना हैं कहने की बात यह है कि आप अपना कर्तव्य पूरा किये जाओ। और उनका भविष्य हम पर छोड़ दो।

नअ्त शरीफ़

दिलों के गुलशन महक रहे हैं ये कैफ़ क्यों आज आ रहे हैं
कुछ ऐसा महसूस हो रहा है हुज़ूर तशरीफ़ ला रहे हैं

कहां का मंसब कहां की दौलत क़सम ख़ुदा की ये है हक़ीक़त
जिन्हें बुलाया है मुस्तफ़ा ने वही मदीना को जो रहे हैं

हबीबे दावर ग़रीब परवर रसूले अकरम करम के पैकर
किसी को दर[1] पर बुला रहे हैं किसी के ख़्वाबों में आ रहे हैं

न पास पी हो तो सूना सावन वो जिस पर राज़ी वही सुहागन
जिन्होंने थामा नबी का दामन उन्हीं के घर जगमगा रहे हैं

गदा[2] की औक़ात है ही कितनी, हक़ीक़तन है ये बात इतनी
ख़ुदा है देता नबी का सदक़ा नबी का सदक़ा ही खा रहे हैं

नवाज़िशों[3] पे नवाज़िशें हैं इनायतों पे इनायते हैं
नबी की नअ्तें सुना सुनाकर हम अपनी क़िस्मत जगा रहे हैं

बनेगा जाने का फिर बहाना कहेगा आकर कोई दीवाना
चलो नियाज़ी तुम्हीं मदीने, मदीने आक़ा बुला रहे हैं।

पश्चिम बंगाल

सियासत के राष्ट्रीय फलक पर छाईं ममता

के० नटवर सिंह

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अब राष्ट्रीय पटल पर छा गई है। जनता पार्ट का मुखिया बनकर उन्होंने भारतीयों को संभाला। इतना ही नहीं, उसने जीत हासिल की, उसने अपनी सीटों में तीन की वृद्धि की। उपलब्धि एक तीसरा शब्द एक विलक्षण है। भाजपा नेताओं ने अपनी सभी चुनावी बंदूकें निकाल दीं। उन्होंने भारी भीड़ को आकर्षित किया। टीवी पर भी हर कोई देख सकता था जिसके लिए कि तालियां सहज नहीं थीं। यह चीयरलीडर्स द्वारा प्रेरित था। घर मंत्री जी ने फिर दोहराया कि भाजपा को दो सौ से अधिक सीटें मिलेंगी और भाजपा की सरकार बनेगी।

उचित सम्मान के साथ, यह काफी अनावश्यक था। मुझे स्पष्ट रूप से याद है कि यह पूर्वानुमान नहीं, इंदिरा गांधी मुझ से कह रही थी कि गिनती के लिए प्रतीक्षा करें। कुमारी ममता बनर्जी के हर झूले और ताने ने तहलका मचा दिया। बंगाल एक सुसंस्कृत राज्य है। बंगाली पुनर्जागरण 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध की एक अनूठी विशेषता थी। राजा राम मोहन रॉय, बंकिम चंद्र चटोपाध्याय, रवींद्रनाथ टैगोर (सबसे ऊपर) अरविंदों घोष और कई अन्य लोगों ने बंगाल के बौद्धिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और सौंदर्य परिवेश को समृद्ध किया। बंगाल भाषा को दो देशों, बांग्लादेश में और पश्चिम बंगाल में बोली जाने वाली असाधारण विशिष्टता प्राप्त है। दोनों देशों के राष्ट्रगान टैगोर द्वारा लिखे गए थे। राजनीति में भी, मुखर्जी और ममता दीदी ने सी. दास, बोस बंधु, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, ज्योति बसु, प्रणब का निर्माण किया। दो नोबुल पुरस्कार विजेता टैगोर और अमर्त्य सेन। मैं यह सुझाव देने के लिए नहीं हूं कि समकालीन पश्चिम बंगाल टैगोर या सी.आर. का बंगाल है। दास लेकिन इसने शानदार भूमिका निभाई और विभाजन से बच गया।

क्या आरएसएस के प्रचारक इस सब से अवगत है? निश्चित रूप से उन्हें उस हिन्दू धर्म के विपरीत पता होना चाहिए ईसाई धर्म और इस्लाम, एक-एक पुस्तक धर्म नहीं है। केवल एस. राधाकृष्णन, नीरद सी को पढ़ना है। हिन्दू धर्म की महानता जानने के लिए चौधरी और वेंडी डोनिगर। भाजपा को लिखने के लिए क्या मूर्खता होगी। हां, यह पश्चिम बंगाल, मथुरा, अयोध्या और खो दिया है वाराणसी, लेकिन यह निश्चित रूप से नीचे और बाहर नहीं है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र की छवि भले ही हो नृत्य किया यह मेरे फैसले में एक गुज़रता हुआ चरण हैं राजनीति में एक सप्ताह लंबा समय है, एक पूर्व ने कहा लेबर पार्टी ब्रिटिश प्रधानमंत्री।

मोदी जी 2024 तक कहीं नहीं जा रहे हैं। भले ही भाजपा नहीं जीत पाए अगले वर्ष चुनाव होने जारहे सभी राज्यों में चुनाव, मोदी जी प्रधानमंत्री के रूप में जारी रहेंगे। आरएसएस कोई विकल्प नहीं पैदा कर सकता। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिए? नंबर एक। युक्त होने पर ध्यान लगाओ और कोविड-19 का उन्मूलन। नंबर दो, कोविड-19 लहर तीन के लिए तैयार रहें अगला। अच्छा सुनिश्चित करें शासन। चार की संख्या। युद्धस्तर पर बेरोज़गारी से निपटना। पांच, त्वरित कार्रवाई करें और भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ निर्णायक कार्रवाई। भ्रष्टाचार के दो पक्ष हैं खुदरा भ्रष्आचार और थोक भ्रष्टाचार।

आप सफलतापूर्वक सभी पांचों के साथ व्यवहार कर सकते हैं, क्योंकि लोगों को आप पर, देश पर भरोसा है आपकी ईमानदारी, ईमानदारी, हिम्मत और आपकी वास्तविक जीवन शैली की प्रशंसा करें। भारत को एक मजबूत विपक्ष की सख़्त ज़रूरत है। प्रधानमंत्री के बगल में, आप रूपक हैं देश का सबसे बड़ा लंबा नेता। सबसे अनुभवी और शरद पवार के संपर्क में रहें हमारे पास स्थिर राजनेता हैं। ग़ैर भाजपा राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ भी। लुप्त होती को अनदेखा न करें कांग्रेस। इसमें आज भी गांडीव के बावजूद जीवन है। यह अभ्यास आसान नहीं होगा क्योंकि ज़्यादातर मुख्यमंत्री राजनीतिक रूप से प्राइम दान होते हैं फूला हुआ अहंकार।

मेरे विचार में (यह अधिक मूल्य नहीं है) आप इसे कर सकते हैं। आप इसे अवश्य करें। मैं तुम्हारी अच्छी किस्मत की कामना करता हूं और सफलता। अब मैं उस घातक विपत्ति में आ गया हूं जिसका देश सामना कर रहा है। दुनिया बदल रही है, बदल गई है, इसलिए हमारा जीवन है। सबसे ज़्यादा पीड़ित बेसहारा और ग़रीब है। इससे भी ज़्यादा भयावह और दिल-ब्रेकिंग उन छोटे लड़कों और लड़कियों की स्थिति है जो अनाथ हो गए हैं। ठग, बदमाश, बदमाश होंगे उन्हें लुभाना, उन्हें बेचना।

अन्य उन्हें अनाथालय में डाल देंगे, जो नरक के छेद से मिलते जुलते हैं। यह ज़रूरी है कि उनकी रक्षा की जाए। इस संबंध में देरी एक बड़ी त्रासदी होगी। अंबानी है सैकड़ों समान बच्चों की शिक्षा और देखभाल।

अन्य कापोरेट प्रमुख उनका अनुसरण क्यों नहीं कर सकते उदाहरण? पहले कोविड-19 महामारी को बुद्धिमानी से, कुशलता से और शीघ्रता से संभाला गया था। परिणाम हो सकते हैं दुनिया भर में देखा। कोविड दो एक और कहानी है। सरकार ने देश को नीचा दिखाया। प्रधानमंत्री को पूरी तरह से दोषी नहीं ठहराया जाना है। यह एक प्रणालीगत विफलता थी। कहा जा रहा है कि वेव थ्री राउंड है कोना। इससे निपटने के लिए तैयारी करें। झपकी लेते हुए नहीं पकड़ा जाएगा।

मेरा मानना है कि जो शक्तियां हैं तीन लहर शामिल करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। इस सप्ताह दो करीबी दोस्तों का निधन हो गया। जगमोहन ने दिल्ली, गोवा और कश्मीर में अपनी छाप छोड़ी। उसके किताबें खूब बिकी। उनकी प्रशंसा और सम्मान हुआ। मैं उसे लगभग 50 सालों से अच्छी तरह जानता था। वह 94 वर्ष के थे उम्र का। राशपाल मल्होत्रा सेंटर फॉर रिसर्च इन रूरल एंड इंडस्ट्रियल के संस्थापक निदेशक विकास, चंडीगढ़ कोविड-19 का शिकार बना। वह 84 वर्ष के थे। हम देर से दोस्त थे 1970 के दशक में। दोनों के परिवारों के प्रति मेरी सच्ची संवेदना।□□

उत्तर प्रदेश

महामारी की मार से कराहता असली भारत

हेमंत तिवारी

हिंदी हृदय प्रदेश का असली भारत घोर संकट के दौर से गुज़र रहा है। सूबे के शहरों में सरकारी आंकड़े कोरोना के क्रमशः क्षीण होने का दावा कर रहे हैं तो ग्रामीण उत्तर प्रदेश के जिले जिले से कराह और करुणा क्रंदन की ख़बरें हैं। जौनपुर के पिलकिछा गांव में एक ही दिन दो दर्जन से ज़्यादा लाशें जलीं तब सरकार को कोरोना जांच और सेनिटाइजेशन का ध्यान आया।

इसी बीच यमुना और गंगा नदियों में तैरती लाशों और उन्नाव में घाट किनारे दर्जनों लाशों के दफ़नाने की तस्वीरों ने योगी आदित्यनाथ सरकार को फिर याद दिलाया कि कराहते गांवों पर ध्यान दीजिए जहां पंचायत चुनाव के बाद बड़े पैमाने पर कोरोना ने हमारे निर्दोष अन्नदाताओं पर कहर ढाना शुरू कर दिया है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने भी गंगा में तैरती लाशों को लेकर यूपी और बिहार की सरकार से जवाब तलब किया है।

पहली बार अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी करीब इसी समय गांवों से गंगा किनारे ले जा रही लाशों को लेकर अफसरों को हिदायत की बात कही है। योगी ने कहा कि सभी ज़िलों के अफसरों को नदियों के किनारे मॉनिटरिंग करने का आदेश दिया है। अफसर स्वयं देखें की कोई शव नदी में न प्रवाहित किया जाए और न ही घाट किनारे दफ़्र हो। इसके लिए हर ज़िले में नदी किनारे टीमें तैनात की जाएंगी। उन्होंने कहा कि हम नदियों में जानवरों तक को नहीं फेंकते हैं, इससे जल प्रदूषण फैलता है इसलिए हमें सख़्ती से शवों का जल प्रवाह भी रोकना होगा। वास्तव में यूपी और बिहार में गंगा नदी में संदिग्ध कोविड मरीज़ों के शवों को तैरते हुए देखे जाने के चार दिन बाद अब उन्नाव से खौफनाक तस्वीर सामने। यहां गंगा नदी के किनारे दो स्थानों पर तमाम लाशें रेत में दफ़न कर दी गई।

संयोग की बात है कि ज़्यादातर अधिकांश केसरिया कपड़े में लिपटे हुए थे, हालांकि, इस बात की पुष्टि नहीं हुई कि सभी लाशें कोविड मरीज़ों की ही है। उन्नाव के जिलाधिकारी रवीन्द्र कुमार कहते हैं कि कुछ लोग शव नहीं जलाते बल्कि नदी के पास रेत में दफन कर देते हैं। जानकारी मिलने के बाद अधिकारियों को घटनास्थल पर भेजा गया है। उससे जांच के बाद कार्रवाई करने को कहा है। गांवों में कोरोना की खौफनाक तस्वीर का अंदाज़ा गोंडा से आए आंकड़ों से लगाया जा सकता है।

> **गांवों में जांच के नाम पर महज़ कुछ खानापूरी ही नज़र आ रही है और कोविड के लक्षण मिलने पर दवा पहुंचना तो दूर की बात है। उत्तर प्रदेश के गांवों से जो ग्राउंड रिपोर्ट मिल रही है उसके मुताबिक हर दूसरे घर में 3-4 लोगों में कोरोना के लक्षण मिल रहे हैं पर या तो लोग टेस्ट कराना नहीं चाहते हैं या हो नहीं रहा है। स्थिति यहां तक बिगड़ चुकी है कि कोरोना के इलाज में प्रयोग होने वाली सामान्य सर्दी जुकाम बुख़ार तक की दवाएं भी मिलना मुश्किल हो गया है।**

यहां शहर के मुक़ाबले गांवों में संक्रमण रफ्तार सात गुना यानि कुल 119 मरीज़ों में 14 शहर और 105 गांवों के थे। चार मौतें हुईं, वह भी गांवों से। पूर्वांचल के ग्रामीण इलाकों के बदतर हालात का अंदाज़ा इसी बात से लगाइए कि मुख्यमंत्री के जिले गोरखपुर के नेवास गांव में पंचायत चुनाव के बाद से 14 लोगों की मौत हो चुकी है। मीडिया में खबर आई तो 90 लोगों की टेस्टिंग हुई जबकि गांव की आबादी है 5 हज़ार। अधिकांश लोग बुख़ार, खांसी, सांस फूलने की शिकायत कर रहे हैं। इसे पंचायत चुनाव का असर कहें, लापरवाही या वायरस की गति, कोरोना अब शहरों से निकल कर गांवों में पैर पसार चुका है। शहरों में ही कोरोना जांच की हालात इतनी खस्ता है तो गांवों का कोई पुरसाहाल तक नहीं।

प्रदेश के तमाम गांवों से मौतों की ख़बर आ रही है पर लोगों को पता भी नहीं कि कारण क्या है। प्रदेश के गांवों हालांकि सरकार ने जांच की कार्यवाही शुरू करने का दावा किया है पर ज़मीन यह होता नज़र नहीं आ रहा है। गांवों में जांच के नाम पर महज़ कुछ खानापूरी ही नज़र आ रही है और कोविड के लक्षण मिलने पर दवा पहुंचना तो दूर की बात है। उत्तर प्रदेश के गांवों से जो ग्राउंड रिपोर्ट मिल रही है उसके मुताबिक हर दूसरे घर में 3-4 लोगों में कोरोना के लक्षण मिल रहे हैं पर या तो लोग टेस्ट कराना नहीं चाहते हैं या हो नहीं रहा है। स्थिति यहां तक बिगड़ चुकी है कि कोरोना के इलाज में प्रयोग होने वाली सामान्य सर्दी जुकाम बुख़ार तक की दवाएं भी मिलना मुश्किल हो गया है।

बाक़ी पेज 11 पर

ओलंपिक से पहले यूरोप में खेलना चाहते हैं श्रीशंकर

भारत के लंबी कूद एथलीट मुरली श्रीशंकर इस वर्ष होने वाले टोक्यो ओलंपिक से पहले यूरोप में खेलना चाहते हैं। लंबी कूद के राष्ट्रीय रिकॉर्ड होल्डर श्रीशंकर का भारत में कोरोना वायरस की दूसरी लहर के कारण यूरोप जाने का प्लान बाधित हुआ है।

श्रीशंकर ने कहा ''इस वर्ष ओलंपिक से पहले मुझे यूरोप में दो-तीन अच्छे टूर्नामेंट में भाग लेना था लेकिन भारत में कोरोना के मामलों को देखते हुए मुझे नहीं लगता कि मैं जा पाऊंगा कि इस माह मैं यूरोप की यात्रा कर पाऊंगा। मैं अब अगले महीने वहां जाने की योजना बना रहा हूं।

केरल के रहने वाले 22 वर्षीय एथलीट को हालांकि भरोसा है कि उन्हें कुछ अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट में शामिल होने का अवसर मिलेगा। श्रीशंकर ने कहा 'मेरे स्पोन्सर्स इस बारे में काम कर रहे हैं और मैं जून में भी यूरोप नहीं जा पाया तो मेरे पास अगले माह बेंगलुरु में राष्ट्रीय इंटर स्टेट चैम्पियनशिप में भाग लेना ही आखिरी विकल्प होगा।'' उन्होंने कहा, ''सभी शीर्ष एथलीटों के लिए यह चुनौतीपूर्ण स्थिति है। लेकिन मेरी रणनीति अपनी फिटनेस को बरकरार रखना है। टोक्यो में मेरा इवेंट दो अगस्त में शुरू होगा इसलिए मैं अपना स्वस्थ अच्छा रखना चाहता हूं जिससे उस दिन बेहतर प्रदर्शन कर सकूं।''

श्रीशंकर ने मार्च में पटियाला में हुए फेडरेशन कप में अपना निजी राष्ट्रीय रिकॉर्ड को सुधार कर 8.26 मीटर किया था। उनका प्रदर्शन ओलम्पिक क्वालीफिकेशन मार्क 8. 22 से बेहतर था। उनका पिछला राष्ट्रीय रिकॉर्ड 8.20 मीटर था जो उन्होंने भुवनेश्वर में 2018 में हुए नेशनल ओपन चैम्पियनशिप के दौरान हासिल किया था।

मेरी ट्रेनिंग उम्मीद के मुताबिक ही चल रही है लेकिन मैं ओलंपिक में अपना कौशल बढ़ाने के लिए कुछ प्रतियोगिता में भाग लेना चाहता हूं। ट्रेनिंग के दौरान मैंने टेक-ऑफ और लैंडिंग में सुधार किया है लेकिन मैं देखना चाहता हूं कि दबाव में मैं इसे दोहरा सकता हूं या नहीं।❑❑

22 दिन में आईपीएल के बाकी सत्र को कराने की तैयारी

आईपीएल के दक्षिण अफ्रीका से सीरीज़ रद्द

बीसीसीआई ने भारत की दक्षिण अफ्रीका के ख़िलाफ़ सितंबर में होने वाली तीन मैचों की टी-20 सीरीज को रद्द कर दिया है और स्थगित इंडियन प्रीमियर लीग के बाकी सत्र को 22 दिनों में पूरा कराने की तैयारी कर ली है। इसे संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में 18 या 19 सितंबर से फिर से शुरू किया जा सकता है, जिसमें 10 डबर हेडर (एक दिन में दो मैच) खेलने जाने की उम्मीद है।

बीसीसीआाई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि फाइनल मुक़ाबला 9 या 10 अक्तूबर को खेला जा सकता हैं। तीन सप्ताह को विंडो सत्र को पूरा करने के लिए पर्याप्त होगा, जिसमें लीग के सत्र के बाकी 31 मैच खेले जाने हैं। टूर्नामेंट का आयोजन बीसीसीआई, फ्रेंचाइजी और प्रसारणकर्ता सहित सभी प्राथमिक हितधारकों के लिए फायदे वाला होगा। आईपीएल क बायो-बबल में कोविड-19 के कई मामले सामने आने के बाद इसे चार मई को स्थगित कर दिया गया था। अधिकारी ने बताया कि ''बीसीसीआई ने सभी हितधारकों के साथ बात की है और 18 से 20 सितंबर के बीच टूर्नामेंट शुरू हो सकता है। 18 सितंबर को शनिवार और 19 सितंबर को रविवार है। संभावना है कि आप सप्ताहांत के दिन दोबारा लीग शुरू करना चाहेंगे। इसी तरह 9 या 10 अक्तूबर को फाइनल हो सकता है, क्योंकि यह सप्ताहांत है। हम कार्यक्रम को अन्तिम रूप दे रहे हैं ओर 10 दिन दो मैच होंगे और बाकी सात दिन सिर्फ शाम को मैच होंगे। इसके अलावा चार मुख्य मैच (दो क्वालिफायर, एक एलिमिनेटर और फाइनल) के साथ 31 मैच पूरे होंगे।

दक्षिण अफ्रीका के ख़िलाफ़ सितंबर में होने वाली भारत की टी-20 सीरीज

बाकी पेज 11 पर

आईपीएल का दोबारा से शुरू होना सुखद : नीशम

न्यूजीलैंड के ऑलराउंडर जैम्स नीशम ने कहा कि उन्हें नहीं लगता है कि स्थगित हुए आईपीएल 2021 फिर से भारत में शुरू किया जाएगा। उन्होंने साथ ही कहा कि अगर आईपीएल फिर से शुरू होता है, तो वह इस टूर्नामेंट में वापसी के लिए तैयार है। नीशम ने कहा ''अगर यह दोबारा से शुरू होता है, तो मुझे इसमें संदेह है कि यह फिर से भारत में शुरू होगा। मुझे लगता है कि हमने पहले ही टी-20 विश्व कप को भारत से बाहर जाने की योजना देखी है और वे इस तरह की चीज़ों से बेहद सतर्क रहने वाले हैं।

मैंने आईपीएल के लिए क़रार किया था। मैंने कमिटमेंट किया था कि मैं इसमें खेलता रहूंगा और कभी भी मेरे मन में इस टूर्नामेंट से नाम वापस लेने का ख़्याल नहीं आया। कुछ लोगों की अलग राय हो सकती है, लेकिन मेरा मानना यही है। मैं एक पेशेवर हूं और कई बार ऐसा होता है कि आपको उन देशों में भी जाना पड़ता है जहां जाने के इच्छुक आप नहीं होते हैं लेकिन मैदान में जाकर खेलना ही हमारा काम होता है।'' नीशम आईपीएल के 14वें सीजन में मुंबई इंडियंस का हिस्सा हैं। उन्होंने कहा कि अगर आईपीएल फिर से शुरू होता है तो वह इसमें खेलने के लिए तैयार हैं। ऑलराउंडर ने कहा, ''मैं दोबारा इसमें खेलूंगा, ख़ासकर जब वैक्सीनेशन शुरू हो जाएगी। मुझे नहीं लगता है कि किसी ने उम्मीद की होगी कि इतना जल्दी सब कुछ हो जाएगा।''

अनेक कारणों से होती है एलर्जी की समस्या

हमारे शरीर के पाचन तंत्र में प्रतिरोधक व्यवस्था होती है, जो शरीर में एलर्जी उत्पन्न करने वाले कारकों से लड़ती है। मगर जिस खाद्य पदार्थ से व्यक्ति को एलर्जी है, उसे खाते ही यह प्रतिरोधक तंत्र प्रतिक्रिया करता है, जिससे शरीर में इम्यूनोग्लोबिन-ई नाम की एंटीबॉडिज का निर्माण होता है, जो कोशिकाओं में केमिकल्स का रिसाव करता है, जिससे एलर्जी की समस्या होती है। सामान्यत: खाद्य पदार्थों में मौजूद कुछ प्रोटीन ही इसके लिए ज़िम्मेदार होते हैं। इस एलर्जी की वजह से आपकी त्वचा, जील, श्वसन तंत्र, डायरिया, चेहरे और गले में सूजन या हृदय प्रणाली प्रभावित हो सकती है हालांकि कुछ एलर्जी एक उम्र के बाद खुद ब खुद दूर भी होती है।

वैसे एलर्जी एक वंशानुगत समस्या भी है। कुछ शोध बताते हैं कि अगर किसी बच्चे को मूंगफली से एलर्जी है, तो उसके छोटे भाई को भी मूंगफली से एलर्जी हो सकती है। अगर मां या पिता को है, तो बच्चे में भी यह समस्या हो सकती है। दरअसल, हर व्यक्ति की अपने शरीर की प्रकृति अलग होती है। किसी को मूंगफली या किशमिश से एलर्जी है, तो किसी को दही या मशरूम से। वैसे देखा जाए, तो यह ज़्यादातर बाहरी चीज़ों को खाने से ही होती है। घर में बने खाद्य पदार्थ से एलर्जी के होने के चांसेज बहुत कम होते हैं। इसलिए बाहरी खाने से बचें। साथ ही जिन चीजों से आपको एलर्जी है, उनके विकल्प के तौर पर दूसरी चीज़ें खाएं।

रोज़ाना इस्तेमाल होने वाले सोया, गेहूं, मछली, फल सब्ज़ियां, मक्का आदि कुछ खाद्य पदार्थों में एलर्जी पैदा करने वाले प्रोटीन मौजूद हो सकते हैं। ऐसे में यह पहचान करना ज़रूरी है कि आपको किस खाद्य पदार्थ से एलर्जी है। इस तरह की समस्या होने पर विशेष खाद्य पदार्थ को कुछ समय के लिए बंद कर देना चाहिए। फूड एलर्जी की समस्या किसी भी उम्र में किसी को भी हो सकती है। इस तरह की कोई भी समस्या हो, तो डाक्टर की सलाह ज़रूर लें। डाक्टर की सलाह पर ज़रूरी जांच करवाएं। फूड एलर्जी है या नहीं, यह जानने के लिए स्किन प्रिक टेस्ट, त्वचा में सुईं के ज़रिये जांच, खून की जांच कराने की सलाह दी जाती है। ताकि यह पता लगाया जा सके कि आपके शरीर में खाद्य पदार्थ की वजह से होने वाली इम्यूनोग्लोबिन और एंटीबॉडीज मौजूद है या नहीं।

बाहर की खाने से परहेज़

एलर्जी से संबंधित समस्या होने पर डाक्टर की सलाह पर भोजन में उन चीज़ों से परहेज़ करें, जिससे आपको एलर्जी हो। उचित सावधानी रखकर ही इससे बचा जा सकता है। बाहर रेस्तरां या ढाबे में खाते समय अतिरिक्त सावधानी बरतें। आपको भोजन को लेकर कोई शंका हो तो तुरंत इस खाने में इस्तेमाल सामग्री के बारे में रेस्तरां मालिक से पूछ लें।

बच्चों पर विशेष ध्यान दें

बच्चों को अगर किसी ख़ास चीज से एलर्जी है, तो स्कूल के दोस्तों और टीचर को इस बारे में बताएं, ताकि वह घर के बाहर एलर्जी वाला भोजन न खाए। इस तरह छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रख कर आप फूड एलर्जी से बच सकते हैं। फूड एलर्जी, बेशक कोई गंभीर बीमारी न हो, लेकिन इसे हल्के में लेना कई बार सेहत के लिए ख़तरनाक भी हो जाता है।❑❑

फाइटर : ड्राई फ्रूट्स

जब किसी दिन भोजन न बने, तो सूखे मेवे और अन्य पदार्थ बहुत उपयोगी होते हैं। सूखे मेवों में काजू, बादाम, अखरोट, किशमिश, मुनक्का, पिस्ता, खुबानी, छुआरा, मखाना, अंजीर आदि को विशेष तौर पर संग्रहीत किया जा सकता है। इससे शरीर मज़बूत और सेहतमंद बना रहेगा। साथ ही रोग आदि से मुक्ति में भी यह काफी कारगर हैं। इसी तरह अन्य सूखे खाद्य पदार्थों जेसे-चना, गुड़, मूंगफली, पापड़, सेब आदि भी बहुत उपयोगी हैं। ऐसे खाद्य पदार्थ ख़राब नहीं होते हैं। ये रसोई के पुराने दोस्त कहते जाते हैं। मुट्ठीभर भी चना खाकर आप दिन भर की ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं। इन ड्राइ फ्रूट्स को घर और ऑफिस में स्टोर करके रखना चाहिए अचानक उपयोग में लाए जा सकते हैं, और बहुत देर तक भोजन का विकल्प भी साबित हो सकते हैं। वैसे भी आजकल कोरोना काल में इम्यूनिटी बढ़ाने पर विशेष बल दिया जा रहा है, तो यह ड्राइ फ्रूट्स काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

शेष.... पाकिस्तान में जीएसपी....

में मिला था जिन्होंने धार्मिक भावनाओं को आहत करने और किसी की धार्मिक भावनाओं को जानबूझ कर अपमान करने को आपराधिक कृत्य बना दिया था। बाद के दशकों में, इस्लामी सैन्य तानाशाह जनरल ज़िया उल हक़ ने वर्ष 1977 और 1988 के दौरान इस कानून का विस्तार करते हुए पवित्र कुरआन का अपमान करने के जुर्म में उम्रक़ैद की सज़ा निर्धारित कर दी। उसके बाद पैगंबर मोहम्मद साहब का अपमान करने के जुर्म में मौत की सज़ा तय कर दी गई।

अब पाकिस्तान की स्थिति और बिगड़ती जा रही है। डीडब्ल्यू की रिपोर्ट के अनुसार, सरकार यूरोपीय संघ की चिंताओं को दूर करने को लेकर जहां बहुत उदासीन दिख रही है, वहीं पाकिस्तान का व्यापारी वर्ग जीएसपी प्लस दर्जे की समाप्ति की आशंका से चिंतित है। पाकिस्तान स्टॉक एक्सचेंज के डायरेक्टर और पाकिस्तान क्लॉथ मर्चेंट्स एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष अहमद चिनॉय कहते हैं कि यूरोपीय संघ के आरक्षण को नज़रअंदाज़ करना देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुचा सकता है। ❑❑

शेष.... 22 दिन में आईपीएल....

टीम की टी-20 विश्व कप की तैयारियों का हिस्सा थीं। सूत्र ने कहा 'इस सीरीज का आयोजन नहीं होगा वैसे भी आईपीएल जैसे प्रतिस्पर्धी टूर्नामेंट में खेलने से बेहतर टी-20 विश्व कप की तैयारी नहीं हो सकती। टी-20 विश्व कप आईपीएल के ख़त्म होने के एक सप्ताह या 10 दिन के भीतर शुरू हो जाएगा, इसलिए दक्षिण अफ्रीका के ख़िलाफ़ सीरीज बाद में किसी अन्य तारीख़ों पर हो सकती है। संभावना है कि भारत जब अगले वर्ष की शुरुआत में दक्षिण अफ्रीका का दौरा करेगा तो अतिरिक्त मैच खेल सकता है। ❑❑

शेष.... महामारी की मार से....

हालात हर दिन ख़राब हो रहे हैं और गांव-गांव अर्थी उठ रही है। रात में सोए, सुबह मरे मिल रहे हैं। गांव-गांव बुख़ार हैं सर्दी, खांसी, जुकाम हैं। आज दिनभर ग्रामीण क्षेत्रों से भयावह ख़बरें आ रही हैं। कोविड रैपर में लिपटे लाशें यमुना नदी में हमीरपुर में मिलीं। एक रिपोर्ट के मुताबिक प्रधानमंत्री मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी जिले के 8 ब्लॉक के 22 गांवों में पिछले एक माह के दौरान 70 से ज़्यादा लोगों की जान जा चुकी है। मरने वालों में कोरोना के लक्षण थे, लेकिन किसी का टेस्ट नहीं हुआ था। यहां मेडिकल स्टोर संचालकों का कहना है कि इन दिनों सामान्य बुख़ार की दवाईयां भी मिलना मुश्किल हो गया है। कोरोना के लक्षण दिखने पर लोगों को टेस्ट कराने की सलाह देते हैं, लेकिन लोग मना कर देते हैं।

किसी तरह उन्हें सप्लीमेंट्री दवाईयां दी जा रही हैं, जिससे वे ठीक हो सकें। जौनपुर के इमिलिया शमशान घाट पर एक दिन में इतने शव अन्तिम संस्कार के लिए आ रहे हैं जितना औसतन एक महीने में आते थे। यही दशा सुल्तानपुर से लेकर सहारनपुर तक है। इसी तरह यूपी के गाज़ीपुर जिले में एक माह के अंदर 20 गांवों में 59 से ज़्यादा मौतें दर्ज की गई हैं। पूर्वांचल का ये जिला काफी महत्वपूर्ण है। बनारस से सटे होने के चलते जिले में पिछले एक माह के अंदर कोरोना के मामलों में 200 प्रतिशत से ज़्यादा का इज़ाफ़ा हुआ हैं यहां अब तक 17 हजार 950 लोग संक्रमण की चपेट में आ चुके हैं। इनमें 3,389 मरीज़ों का इलाज चल रहा है, जबकि 14 हज़ार 415 लोग ठीक हो चुके हैं।

संक्रमण के चलते अब तक 146 लोगों की मौत हो चुकी है। कुछ इसी तरह का हाल बनारस से सटे आज़मगढ़ जिले का है जहां के 30 गांवों में हर घंटे में 2 से 3 लोगों की मौत हो रही है। खुद स्वास्थ्य महकमे के अधिकारियों का कहना है कि इस जिले में हर घंटे 2 या 3 लोगों की मौत हो रही है। मरने वाले 98 प्रतिशत लोग बुखार, स्वाद का न आना, सांस लेने में समस्या झेल रहे थे। पड़ोसी मऊ जिले के 10 गावों में कोरोना के 3 हज़ार से ज़्यादा संदिग्ध पाए गए हैं। जिले में अब तक सरकारी आंकड़े के अनुसार 7,154 लोग कोरोना पॉजिटिव पाए जा चुके हैं, इनमें 45 की मौत हुई है। अब हक़ीक़त देखें तो यहां के 28 गांवों में हालात बेहद ख़राब हैं। मुहम्मदाबाद गोहना, घोसी और मधुबन के गांवों में 3000 से ज़्यादा लोग कोरोना के संदिग्ध हैं। अब तक इन गांवों में 15 दिन के अंदर 34 से ज़्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। इन मौतों के ठीक उलट प्रदेश सरकार का कहना है कि कोरोना की जांच के लिए टीम ग्रामीण इलाकों में घर-घर जा रही है। अब तक 48 लाख 63 हजार 298 लोग के घर टीम पहुंच चुकी है। इनमें 68 हजार 1 सौ 9 लोगों में कोरोना के मामूली लक्षण पाए गए।

उत्तर प्रदेश में ज़बरदस्त कोरोना प्रसार के बीच चार चरणों में सम्पन्न हुए पंचायत चुनाव प्राइमरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए जानलेवा साबित हुए हैं। प्रदेश भर पंचायत चुनाव कराने की अहम ज़िम्मेदारी इन्हीं प्राथमिक शिक्षकों को सौंपी गई थी। प्राथमिक शिक्षक के संघ के मुताबिक इस पूरी कवायद में 700 से ज़्यादा शिक्षकों की जान कोरोना से चली गई। शिक्षक संघ ने बाक़ायदा उन 700 से ज़्यादा मृत शिक्षकों की सूचि जारी कर सरकार से जवाब मांगा है कि कोरोना की ज़बरदस्त लहर के बीच आख़िर क्यों चुनाव कराए गए। यूपी में पंचायत चुनाव उस समय कराए गए जब कोरोना का प्रसार अपने चरम पर है। चुनाव डयूटी के प्रशिक्षण से लेकर मतदान तक संक्रमण को रोकने के लिए कोई उपाय नहीं किए गए। ❑❑

मैसी से तीन अरब रुपये का क़रार चाहता है सिटी

स्पेनिश फुटबॉल लीग ला लीगा का क्लब बार्सिलोना ख़राब प्रदर्शन के साथ ख़िताबी दौड़ से बाहर हो गया हैं अब सबकी नज़रें उसके सुपरस्टार स्ट्राइकर लियोनल मैसी पर टिकी हैं, जिनका क़रार ख़त्म हो रहा है। अभी तक घोषणा नहीं हुई है कि मेसी बार्सिलोना के साथ क़रार को आगे बढ़ाएंगे या फिर किसी नए क्लब के साथ जुड़ेंगे।

हालांकि, मैसी के साथ क़रार करना किसी क्लब के लिए आसान नहीं है, लेकिन इंग्लिश क्लब मैनचेस्टर सिटी, मैनचेस्टर यूनाइटेड और पेरिस सेंट जर्मेन उन पर अपनी रूचि शुरू से ही दिखा रहे हैं। इस बीच, एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि मैनेजर पेप गार्डियोला की टीम मैनचेस्टर सिटी अर्जेंटीना के इस खिलाड़ी के साथ क़रार करने में सबसे आगे है और यह क्लब मैसी के साथ एक साल के लिए करार करना चाहता है। सिटी मैसी को एक वर्ष के लिए 25 मिलियन पाउंड (करीब तीन अरब रुपये) देने के लिए तैयार है। यदि यह क़रार हो जाता है तो मैसी प्रीमियर लीग के इतिहास में सबसे अधिक भुगतान पाने वाले खिलाड़ी बन जाएंगे। रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि मेसी ने गॉर्डियोला से बात भी की थी और वह उनके साथ जुड़ना चाहते हैं। वहीं, बार्सिलोना के मैनेजर रोनाल्ड कोमैन ने अभी भी दावा किया है कि मैसी क्लब को छोड़कर नहीं जाएंगे और उनके बिना खेलना मुमकिन नहीं है। उन्होंने कहा कि अंतिम फैसला मैसी को करना है, लेकिन मुझे और टीम को यही उम्मीद है कि वह क्लब के साथ जुड़े रहेंगे।

शेष.... तीसरी लहर से पहले उसे पहचाने

जाना चाहिए, ताकि जहां तक संभव हो, योग्य व्यक्ति तक पहुंच सकें। भारत में बच्चों के लिए कोविड टीकों का क्लिनिकल ट्रायल हो रहा है। एक बार निष्कर्ष उपलब्ध होने के बाद बच्चों को लगाए जाने के लिए मंज़ूरी की उन्नत अवस्था में है, जब वे टीके भारत में उपलब्ध होते हैं तो उन्हें बच्चों के टीकाकरण के लिए प्राथमिकता दी जा सकती है।

पांचवां, भारत को कोविड-19 डेटा रिकार्डिंग और रिपोर्टिंग में सुधार करने की आवश्यकता है और बीमारी के पैटर्न को समझने तथा किसी उभरते स्ट्रेन की पहचानने के लिए जीनोमिक सिक्वेंसिंग को तेजी से बढ़ाना चाहिए। संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए समय पर उचित रणनीति तैयार करने की दृष्टि से ये दोनों ज़रूरी है। छठा, महामारी की प्रतिक्रिया वैज्ञानिक प्रमाण और विशेषज्ञों की तकनीकी सलाह द्वारा निर्देशित होना चाहिए। राजनेताओं और नीति निर्माताओं को तकनीकी विशेषज्ञों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। उसमें जन स्वास्थ्य, डिजीज मॉडलिंग, अर्थशास्त्री, समाज विज्ञानी जेसे कई स्वतंत्र विशेषज्ञों को जोड़ना सार्थक होगा। आख़िरकार महामारी का केवल स्वास्थ्य पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव भी होता हैं अंत में हर स्तर (केन्द्र, राज्य, ज़िला) पर महामारी में पिछले 15 महीनों की ग़लतियों और अच्छाइयों से सबक़ सिखने की ज़रूरत है। आगे संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए उन सबका उपयोग किया जाना चाहिए।

एक बात स्पष्ट है कि हम वायरस के ख़िलाफ़ लड़ेंगे और इस महामारी से बाहर निकलेंगे। मौजूदा और किसी भी भावी महामारी से लड़ने के लिए बेहतर और दीर्घकालीन समाधान एक मजबूत स्वास्थ्य प्रणाली है, जो प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं और सरकार द्वारा वित्त पोषित हैं। यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण सबक़ है, जिसे भारत के नीति निर्माताओं को याद रखना चाहिए। बुद्धिमान लोगों का कहना है कि समय पर समस्या को पहचान लेना उसका आधा हल निकाल लेना है। महामारी के ख़िलाफ़ तैयारी रातोंरात नहीं हो सकती इसलिए तीसरी लहर की अवश्यंभाविता की इस मान्यता का उपयोग सभी स्तरों पर सरकारों द्वारा किया जाना चाहिए ताकि वे प्रभाव को कम करने की तैयारी शुरू कर सकें। ❑❑

शेष.... मंज़र पस-मंज़र

उनके लिए बहुत कठिन हालात होंगे। इनमें बेसहारा बुज़ुर्ग और अनाथ बच्चे शामिल हैं इसलिए उन पर विशेष ध्यान देने की और उन्हें सहायता देने की आवश्यकता होगी। दिल्ली राज्य में यह काम करना अपेक्षाकृत आसान होगा। इसकी एक वजह तो यह है कि दिल्ली एक छोटा मुख्यत: शहरी राज्य है और यहां कोविड के आंकड़े भी काफी सही सही उपलब्ध हैं, लेकिन कई सारे राज्यों, विशेषकर बड़े राज्यों में कोविड के मरीज़ों और मरने वालों के बारे में आंकड़ों व जानकारी में इतनी हेराफेरी है कि उनके सहारे मदद की कोई योजना बनाना बेकार होगा। कोविड-19 की इस हर ने ग्रामीण इलाकों में भी तबाही मचा रखी है, जहां न जांच की सुविधा है, न ही इलाज की और जहां कोविड से मरे लोग सरकारी गिनती में आएंगे ही नहीं। दिल्ली तुलनात्मक रूप से एक सुविधा सम्पन्न राज्य है, जहां सरकारी स्कूल व अन्य सुविधाएं बेहतर हैं और अगर सरकार राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक कौशल दिखाए तो ऐसी योजनाएं सफल हो भी सकती है आखिरकार तमाम सरकारी योजनाओं का असली कसौटी तो यही होती है कि घोषणाओं और उनके ज़मीनी रूप में कितना कम फर्क है।

सभी को मिले राहत

राजधानी दिल्ली में ही कोरोना के कारण किसी की मौत की स्थिति में उसके परिवार को आर्थिक राहत देने संबंधी दिल्ली सरकार की घोषणाएं स्वागतयोग्य है। आर्थिक मदद के तहत जितनी धनराशि देने का ऐलान किया गया है, उससे पीड़ित को कुछ राहत अवश्य मिलेगी। मुख्यमंत्री ने इसके साथ ही राशन कार्ड धारकों व बिना राशन कार्ड धारकों वाले आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों को भी पांच किलो मुफ्त दिया जाएगा। सरकार को इसे जल्द कैबिनेट से पास कर धरातल पर उतारना चाहिए, ताकि पीड़ित परिवारों को राहत मिलने की प्रक्रिया शुरू हो सके।

दिल्ली में कोरोना की मौजूदा लहर में बड़ी संख्या में लोगों की जान गई हैं ऐसे भी अनेक बच्चे हैं जिनके सिर से उनके माता-पिता का साया उठ गया। सरकारों से ऐसी अपेक्षा की ही जानी चाहिए कि वे आगे आकर कोरोना की महामारी के शिकार हुए लोगों को हर तरह से मदद करें। आर्थिक राहत की योजनाओं पर अमल करने के दौरान पात्र परिवारों का चयन करते समय सरकार को ये भी देखना होगा कि ये राहत सिर्फ उन्हीं परिवारों तक सीमित न रह जाए, जिनके स्वजन की अस्पतालों में मौत हुई हैं इस योजना की वास्तविक सफलता तभी है, जब सरकार हर उस परिवार तक पहुंचे, जिसने कोरोना से अपने किसी सदस्य को खोया है, भले ही वह अस्पताल में भर्ती न हो सका। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि राजधानी में बड़ी संख्या में लोगों की मौत अस्पताल के बाहर हुई है। कई मरीज़ों की मौत अस्पताल में बेड न मिलने के कारण भी हुई, जिनका ठीक-ठीक आंकड़ा सरकार के पास संभवत: नहीं होगा। सरकार को ऐसे परिवारों की पहचान करके उन तक भी पहुंचना चाहिए, ताकि दिल्लीवासियों को राहत देने का उद्देश्य सफल हो सके।

SHANTI MISSION (HINDI WEEKLY) NEW DELHI Postal Registration No. DL(C)-01/1266/2021-23
Publishing Date : **23 May.2021** Posting Days : **MON. - TUE.** at **N.D.P.S.O.** New Delhi-110002 R.N.I. 57270/93

मंज़र पस-मंज़र — मीम.सीन.जीम

•ज़िम्मेदारी के बजाय•अनाथों की सुध•सभी को मिले राहत

ज़िम्मेदारी के बजाय

इसमें कोई दोराय नहीं कि देशभर में फैली महामारी के संकट के बीच केन्द्र सरकार ने अपनी ओर से हालात पर क़ाबू पाने के लिए यथासंभव कोशिश की है लेकिन यह भी सच है कि घोषणा के बरक्स कुछ फैसलों पर अमल को लेकर जिस तरह की लापरवाही देखी गई, उसने समस्या को और बढ़ाया। इस महामारी से निपटने के क्रम में मौजूदा सीमाओं के तहत टीकाकरण को एक अहम उपाय के तौर पर देखा जा रहा है। शुरू में दो कंपनियों के टीकों के सहारे टीकाकरण अभियान की शुरुआत हुई, तब ऐसा लगा कि अब देश कोरोना की वजह से उपजे संकट से पार पाने की दिशा में आगे बढ़ चुका है। अब तक टीके की सत्रह करोड़ से ज़्यादा ख़ुराक दी जा चुकी है। अभी इस दिशा में बहुत लंबा सफ़र तय करना बाकी है। लेकिन सच यह है कि अभी भी टीकाकरण की रफ्तार बेहद धीमी हो गई हे। इसकी वजह टीकों की कमी है। प्रश्न है कि अगर टीके को इस बीमारी का एकमात्र इलाज बताया गया था तो जिस रास्ते यह मुहैया हो सकता था, उसे सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी किसकी थी?

यह बेवजह नहीं है कि अब अदालतें भी टीकाकरण अभियान को लेकर सरकार की कार्यशैली पर सवाल उठा रही हैं लेकिन ऐसा लगता है कि सरकार में ज़िम्मेदार पद पर बैठे मंत्री अब शायद स्थिति का सामना करना ही नहीं चाहते। गौरतलब है कि टीकों की कमी को लेकर उठने वाले प्रश्नों के बीच केन्द्रीय रसायन और उर्वरक मंत्री सदानंद गौड़ा ने कहा कि निर्देश के मुताबिक टीके का उत्पादन नहीं होने पर क्या सरकार में शामिल लोगों को फांसी लगा देनी चाहिए। ज़ाहिर है, यह मांग कोई नहीं कर रहा हैं मगर संकट जिस पैमाने पर गंभीर हो चुका है, उसमें इस तरह के ग़ैरज़िम्मेदाराना बयान देने के बजाय सरकार और संबंधित महकमों के मंत्रियों को वैसे उपायों की ओर कदम बढ़ाना चाहिए, जिससे समस्या का हल निकल सके। देश में आबादी के अनुपात में अचानक ही सबके लिए टीका मुहैया करा पाना मुश्किल है। लेकिन इसके उत्पादन में बढ़ोत्तरी के प्रयास किए जा सकते हैं या फिर दूसरी कंपनियों के टीकों के प्रयोग की अनुमति के साथ उनकी उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है। एक तक़ाज़ा यह ज़रूर है कि टीकों का निर्माण और इसकी जटिलता के मद्देनज़र इसके पूरी तरह सुरक्षित होने की गारंटी तय करना भी सरकार की ज़िम्मेदारी हैं इसके बजाय अगर ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ने की कोशिश की जाएगी तो सवाल उठना लाज़िमी है।

सही है कि संक्रमण की रोकथाम के लिए पिछले सालभर से पूर्णबंदी और अस्पतालों में इलाज के लिए

देश में आबादी के अनुपात में अचानक ही सबके लिए टीका मुहैया करा पाना मुश्किल है। लेकिन इसके उत्पादन में बढ़ोत्तरी के प्रयास किए जा सकते हैं या फिर दूसरी कंपनियों के टीकों के प्रयोग की अनुमति के साथ उनकी उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है। टीकों का निर्माण और जटिलता के मद्देनज़र इसके पूरी तरह सुरक्षित होने की गारंटी तय करना भी सरकार की ज़िम्मेदारी हैं इसके बजाय अगर ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ने की कोशिश की जाएगी तो सवाल उठना लाज़िमी है।

विशेष व्यवस्थाएं जैसे क़दम उठाए गए, लेकिन हक़ीक़त यह है कि आज की स्थिति में कोई बड़ा फर्क नहीं आया दिखता है। उलटे दूसरी लहर के दौरान यह साफ देखा जा रहा है कि स्वास्थ्य सुविधाओं की लचर हालत की वजह से स्थिति ज़्यादा विकट हो गई। अस्पतालों में ऑक्सीजन और कुछ दूसरी जीवनरक्षक दवाओं जैसी जो सबसे बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता होनी चाहिए थी, उसके अभाव में बहुत सारे लोगों की मौत हुई। पिछले वर्ष जब यह लगभग साफ था कि इस महामारी का दौर लंबा खिंचने वाला है और समय- समय पर यह गंभीर शक्ल लेकर बड़ी तादाद में लोगों की जान ले सकती है, तो पूरे वर्षभर में सरकार ने इससे निपटने के लिए क्या वैकल्पिक इंतज़ाम किए? सरकार को यह स्वीकार करना चाहिए कि फिलहाल संक्रमण से निपटने के लिए जो उपाय किए जा रहे हैं, वे नाकाफी साबित हुए हैं। मगर समस्या की गंभीरता को स्वीकार करने का फायदा तभी है जब उससे पार पाने के लिए ठोस प्रयास किए जाएं, न कि प्रश्न उठाए जाने पर लापरवाही से भरे बयान दिए जाएं।

अनाथों की सुध

दिल्ली की केजरीवाल सरकार ने फैसला किा है कि वह कोविड से अनाथ हुए बच्चों की शिक्षा और जीवन-यापन का ख़र्च उठाएगी। कई बच्चों ने कोरोना संक्रमण से अपने मां-बाप दोनों को खो दिया है। जिस तरह की ख़बरें आ रही हैं, उनसे यही आशंका होती है कि ऐसे बच्चों की संख्या काफी होगी। किसी भी संवेदनशील सरकार और समाज की ज़िम्मेदारी है कि वह ऐसे बच्चों को आर्थिक संकट और असुरक्षा से बचाए। अगर दिल्ली सरकार ऐसा करती है तो वह अपनी महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी निभाएगी। इसके अलावा, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने यह भी घोषणा की है कि जिन बुज़ुर्गों ने अपने बच्चों को खोया है, जो उनके आर्थिक संबल थे, उन्हें भी सरकार की ओर से सहायता दी जाएगी। अच्छा होगा, अगर अन्य राज्य सरकारें भी ऐसी पहल करें।

अभी तो कोरोना की लहर चल रही है और इस समय सबसे बड़ी ज़रूरत इस लहर को नियंत्रित करने और इससे होने वाले नुकसान को यथासंभव सीमित करने की हैं लेकिन जब यह तूफान गुज़र जाएगा, ब सबसे बड़ी ज़रूरत तबाही का जायज़ा लेने और उससे प्रभावित लोगों को अपना जीवन फिर से पटरी पर लाने में मदद करने की होगी। देश की अर्थव्यवस्था कोरोना की मार के पहले भी कुछ धीमी से चल रही है थी और अब महामारी ने तो इसकी गति बहुत ही सामान्य हो जाने के बाद भी शायद अर्थव्यवस्था के ठीक-ठाक हालत में आने में काफी समय लग जाए। ऐसे में, जो भी लोग आर्थिक सहारा खो चुके हैं,

बाक़ी पेज 11 पर

जमीयत उलेमा-ए-हिन्द के अध्यक्ष मौलाना क़ारी सैयद मुहम्मद उस्मान मंसूरपुरी के निधन पर

जमीअत उलेमा राधनपुर, गुजरात का ख़िराजे अक़ीदत

दारुल उलूम देवबंद के कार्यवाहक मोहतमिम और जमीयत उलेमा-ए-हिन्द के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना क़ारी सैयद मुहम्मद क़ारी उस्मान मंसूरपुरी साहब 21 मई 2021 को (बरोज़ जुमा) के दिन दोपहर को अपने मालिके हक़ीक़ी से जा मिलने की ख़बर मिलते ही इस्लामिक जगत और देश व दुनिया में उनके लाखों चाहने वालों में और ख़ासतौर पर जमीयत उलेमा-ए-हिन्द राधनपुर ब्रांच में हर आम व ख़ास में ग़म की लहर दौड़ गई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजऊन

हज़रत वाला अपने तरज़े ज़िन्दगी से मिल्लते इस्लामिया के लिए ये साबित कर दिया कि उनकी ज़िन्दगी नमूना-ए-असलाफ़ थी। हज़रतेवाला हर आम व ख़ास में महबूब थे। उन्होंने न सिर्फ दर्से हदीस से तलबा ए दारुल उलूम देवबंद को फायदा पहुंचाया बल्कि फ़िदा-ए-मिल्लत (र० अ०) की वफात के बाद जिस नाज़ुक दौर से जमीयत उलेमा-ए-हिन्द गुज़र रही थी जब जमीयत उलेमा-ए-हिन्द और मिल्लते इस्लामिया की शानदार रहबरी करके मिल्लते पर एक अज़ीम अहसान किया। हज़रतवाला ने जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष काल में बेशुमार मुल्की और कौमी ख़िदमत अंजाम दिए। जिसमें अम्न व शान्ति कांफ्रेंस, कौमी एकता सम्मेलन, आतंकवाद विरोधी महासम्मेलन और देश में हिन्दू मुस्लिम के बीच में सांप्रदायिक सद्भाव बहाल करने के लिए सद्भावना मंच का गठन और देश की विभिन्न जेलों में बंद बेकसूर लोगों की रिहाई के इंतेज़ामात मुल्क व मिल्लत पर आने वाली मुसीबतों में चाहे वो देश के विभिन्न स्थलों में आई बाढ़ हो या साम्प्रदायिक दंगों में अराजक तत्वों द्वारा किए गए माली नुकसानात हो, हर वक़्त उन्होंने ख़ुद्दामे जमीयत उलेमा-ए-हिंद की शानदार रहबरी की, जैसी अनेक ख़िदमात को तारीख़ के सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा।

हम जमीयत उलेमा राधनपुर के ख़ुद्दामे जमीयत हज़रतवाला को ख़िराजे अक़ीदत पेश करते हैं और उनके मिशन को पूरा करने के साथ-साथ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में दुआ करते है कि...

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हज़रतेवाला की बाल-बाल, करवट-करवट मग़फ़िरत फरमाएं और जन्नतुल फिरदौस में आला मक़ाम अता फरमाए। अल्लाह रब्बुल ईज़्ज़त उनके पसमांदगान को सब्र जमील अता करें और मिल्लते इस्लामिया को और दारुल उलूम देवबंद और जमीयत उलेमा-ए-हिन्द को उनका नेअमल बदल अता फरमाए।

ज़रूरी ऐलान

आपकी ख़रीदारी अवधि पते की चिट पर अंकित है। अवधि की समाप्ति से पूर्व रक़म भेजने की कृपा करें।

रक़म भेजने के तरीक़े:-
❶ मनीआर्डर द्वारा ❷ **Paytm** या **PhonePe** द्वारा 9811198820 पर **SHANTI MISSION**
❸ ऑनलाइन हेतु बैंक खाते का विवरण
SBI A/c 10310541455
Branch: **Indraprastha Estate**
IFS Code: **SBIN0001187**

अपने प्रिय अख़बार साप्ताहिक शांति मिशन को इंटरनेट पर देखने के लिये लॉगऑन करें:
www.aljamiat.in ——— www.jahazimedia.com
Mob. 9811198820 — E-mail: Shantimissionweekly@gmail.com

ख़रीदारी चन्दा

वार्षिक	Rs.130/-
6 महीने के लिए	Rs.70/-
एक प्रति	Rs.3/-

जानकारी के लिये सम्पर्क करें
साप्ताहिक
शांति मिशन
1, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23311455

जमीअत ट्रस्ट सोसायटी की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक शकील अहमद सैयद ने शेरवानी आर्ट प्रिंटर्स, 1480, क़ासिमजान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवाकर मदनी हाल, न. 1, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित किया। संपादक:- मोहम्मद सालिम, फोन:- 23311455, 23317729, फैक्स:- 23316173